ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

मई, 2015

वेद में सरस्वती

जातिवाद : सिक्के के दो पहलू

सिकन्दर की विजय का सच

सफलता को पहचानें

स्वास्थ्य के कुछ मूल सिद्धांत

₹10

संस्मृतियाँ : स्व. पं. चन्द्रभानु आर्योपदेशक

शांतिधर्मी परिसर में आयोजित कार्यक्रम में ध्यान का अभ्यास कराते हुए

उपदेश की एक अन्य मुद्रा

हिसार में एक श्रद्धालु माता सम्मानित करते हुए

स्वामी गोरक्षानन्द जी व स्वामी वेदरक्षानन्द जी के साथ एक कार्यक्रम में यजमानों को आशीर्वाद देते हुए

ग्राम बिटमड़ा में भजनोपदेश करते हुए। मंच पर स्वामी रामवेश व सहदेव बेधड़क।

डॉ. विवेक आर्य के परिवार को आशीर्वाद देते हुए

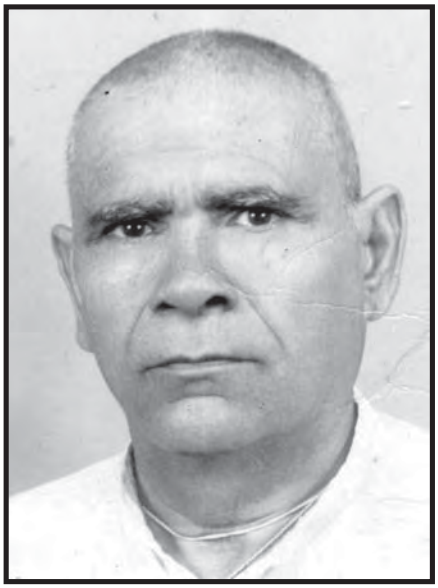

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : **सहदेव समर्पित**
(चलभाष ०६४१६२-५३८२६)

उपसम्पादक : **सत्यसुधा शास्त्री**

प्रबंध संपादक : **सुभाष श्योराण**

आदरी सम्पादक : **यज्ञदत्त आर्य**

सह-सम्पादक : **राजेशार्य आट्टा**
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल

सहयोग : **आचार्य आनन्द पुरुषार्थी**
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी

विधि परामर्शक : **जगरूपसिंह तंवर**

कार्यालय व्यवस्थापक : **रविन्द्रकुमार आर्य**

कम्प्यूटर सज्जा : **बिशम्बर तिवारी**

सहयोग राशि

एक प्रति	: १०.०० रु०
वार्षिक	: १००.०० रु०
आजीवन	: १०००.०० रु०

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

मई, २०१५

वर्ष : १७ अंक : ३ आषाढ २०७२ विक्रमी
स ष्टि संवत्-१६६०८५३११६, दयानन्दाब्द : १६२

क्या? कहाँ?....

आलेख

श्रद्धांजलियाँ/संस्मरण	६
वेद में सरस्वती (गवेषणा)	८
जातिवाद : सिक्के के दो पहलू (सामाजिक चिन्तन)	११
सफलता को जानें (व्यक्तित्व विकास)	१४
सिकंदर (Alexendar) की जीत का सच! (इतिहास के पन्नों से)	१६
हम चयनीय महानताओं से युक्त हों! (आत्मिक उन्नति)	१६
स्वास्थ्य के कुछ मूलभूल सिद्धान्त (स्वास्थ्य चर्चा)	२४
$2H_2O=2H_2+O_2$ जल = हाइड्रोजन+आक्सीजन (विज्ञान)	२८
गर्मी के हादसों से निपटने के उपाय (सावधानी)	३४
कहानी : और बादल छंट गये!	२१
आदमी का मूल्य	२७

कविताएँ : १५, २७

स्थायी स्तम्भ : आपकी सम्मतियाँ-५, बाल वाटिका-२६, भजनावली-२६, समाचार-सूचनाएँ

साथ में नकसीर (Epistaxis) कुछ घरेलु इलाज

कार्यालय :

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

शान्ति प्रवाह

❒सहदेव 'समर्पित'

रोजगारपरक नहीं, संस्कारप्रद शिक्षा

शिक्षा मनुष्य के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है कि शिक्षा के बिना मनुष्य मनुष्य ही नहीं बन सकता है। शिक्षा प्राप्त करके ही मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को जान सकता है और उसे प्राप्त करने के प्रयास कर सकता है; लेकिन शिक्षा के विषय में ही इतना विभ्रम व्याप्त है कि आज तक यह भी निर्धारित नहीं हो सका है कि शिक्षा किस विषय में प्रदान करनी है। आजादी के बाद शिक्षा की जो दिशा निर्धारित की गई, उससे मनुष्य का कितना हित हुआ और वह कितना शिक्षित हुआ, इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करने का अवसर अब आ गया है।

पहला प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा रोजगार प्रदान करने के लिए है? रोजगार जीवन का साधन है, साध्य नहीं है। २५-३० वर्ष के परिश्रम के बाद यदि व्यक्ति बाकी के आधे बचे जीवन के लिए रोजी रोटी जुटाने के योग्य ही बन पाता है तो इससे ज्यादा शिक्षा की व्यर्थता क्या होगी? मेरे विचार से तो शिक्षा को रोजगार परक बनाने का जो निर्णय लिया गया वह शिक्षा पर सबसे बड़ा कुठाराघात था। इस आभामण्डल में शिक्षा दिनों दिन महंगी होती चली गई और आम आदमी की पहुँच से बाहर होती चली गई। प्रतिस्पर्धा इतनी बढ़ी कि छोटे छोटे बच्चों से उनका बचपन छीन लिया गया और किशोरावस्था में उनको प्रतियोगिताओं से जूझने के लिए छोड़ दिया गया। माता पिता अपने बच्चों को वह 'शिक्षा' दिलाने के लिए लालायित रहते हैं, बल्कि अपने सारे संसाधनों को झोंक देते हैं, जिस शिक्षा को प्राप्त करके वह बच्चा एक कम्पनी का गुलाम बन जाएगा, जिसके लिए जीवन एक ढर्रा बन जाएगा-- ढोते रहने के लिये।

शिक्षा का उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना नहीं है। वैदिक वर्ण व्यवस्था में जो व्यक्ति पढ़ाने से भी न पढ़े उसके भी रोजगार की व्यवस्था है। इस शिक्षा से उत्पन्न करोड़ों प्रोफैसनल्स देश और समाज के लिए क्या योगदान कर रहे हैं? कहा जाता है कि इससे देश की भौतिक उन्नति हो रही है। पर यह गंभीरता से सोचने की बात है कि वह उन्नति कहाँ है? वे अपने जीवन की आहुति देकर अपनी क्रय शक्ति बढ़ा रहे हैं। यह एक कुंए से निकाल कर दूसरे कुंए में डालने वाली बात है। जीवन का प्रश्न यह नहीं है कि हम क्या क्या खरीद सकते हैं! जीवन का प्रश्न यह है कि जो वस्तुएँ हमारे पास हैं उनका हम किस प्रकार से समुचित और सर्वश्रेष्ठ प्रयोग कर सकते हैं। दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि उनका अपना जीवन कहाँ है? अपने कार्यस्थल से निकलते निकलते होने वाली सांझ न जाने कब उनके जीवन की सांझ बन जाती है।

वास्तव में शिक्षा मनुष्य को एक सम्पूर्ण मनुष्य बनाने के लिए है। आधुनिक शिक्षा में तनाव है, भागादौड़ी है, पुस्तकों की गठड़ियाँ हैं, पर मनुष्य बनाने की शिक्षा कहीं नहीं है। यदि कहीं किसी व्यक्ति में मानवता के अंश बचे हैं तो वह उनके परिवार, माता पिता के संस्कार हो सकते हैं, शिक्षा के माध्यम से उसमें कोई संवेदशीलता आई हो, यह संभव नहीं। व्यक्ति जितना शिक्षित होता जाता है उतना अधिक स्वार्थी होता जाता है। कभी समाज में गिरते मूल्यों की चिन्ता करते हुए नैतिक शिक्षा देने के प्रयास किये गए हैं तो केवल हाशिये के रूप में कुछ पाठों और पंक्तियों के द्वारा, वह भी औपचारिकता के रूप में।

भारतीय संस्कृति में शिक्षक को आचार्य या गुरु कहा गया है। भारतीय परम्परागत शिक्षा में बच्चे का उपनयन होता है। आचार्य किसको कहते हैं- आचारं ग्राहयति। जो आचरण करना सिखाता है। प्रत्येक मनुष्य के तीन गुरु होते हैं- माता, पिता और आचार्य। जब ये तीन उत्तम शिक्षा देने वाले हों तभी मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है। माता का दायित्त्व गर्भावस्था से प्रारम्भ हो जाता है। जन्म के पांचवें वर्ष तक बालकों को माता, ६ से ९वें वर्ष तक पिता शिक्षा करे। और नौवें वर्ष के आरम्भ में आचार्य कुल में जहाँ पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्या दान करने वाले हों, वहाँ लड़के और लड़कियों को भेज दें। वास्तव में शिक्षा उसी को कहते हैं जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्या आदि दोष छूटें। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

वास्तव में आज शिक्षा में इस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है कि शिक्षित व्यक्ति अपनी परम्परा, पूर्वजों और संस्कारों पर गर्व करना सीखे। अपने जीवन को समाज और राष्ट्र के लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनावे और अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपने आत्मा की भी निरन्तर उन्नति करता जाए।

आपकी सम्मतियाँ

शांतिधर्मी का अप्रैल अंक मिला। धन्यवाद! शांतिप्रवाह 'वेदों में मांसाहार' मांसाहार के विरोध में सशक्त आवाज है। एक जीव दूसरे जीव का मांस खाए, यह कहाँ का इंसाफ है? आजकल म्लेच्छ प्रवृत्ति इस कदर बढ़ गई है कि कुछ देशों में तो लोग गाय, भैंस, सुअर, कुत्ता, ऊँट, हिरण, सांप एवं छिपकली तक खा जाते हैं। वेद, शास्त्र और सभी महापुरुष मांसाहार का विरोध औश्र शकाहार कासमर्थन करते हैं। स्व० पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक का बेहतरीन लेख 'वैदिक धर्म एवं अन्य सम्प्रदाय' अत्यंत उपादेय और ज्ञानवर्धक है। मा० देवराज आर्य एवं योगाचार्य सूर्यदेव आर्य के लेख उपयोगी हैं। भजनावली जीवन का मार्गदर्शन करने वाली है। बालवाटिका भी मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक है।

प्रो० शामलाल कौशल,
975-बी/२०, ग्रीन रोड रोहतक-124001

शांतिधर्मी के मार्च और अप्रैल के अंक बहुत अच्छे निकले हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि योग्य पिता के योग्य समर्पित पुत्र होने के नाते आप शांतिधर्मी को नई ऊँचाईयों तक ले जाएँगे। हमारा पूर्ण सहयोग और आशीर्वाद आपके साथ है। आपने ढिकौली के युवकों की गतिविधियों को प्रकाशित करके एक उत्तम कार्य किया है। इससे निश्चय ही इनका उत्साह बढ़ेगा। जैसे आपने स्व० चौधरी पीरूसिंह की बहुत ही प्रेरणादरयी घटना प्रकाशित की थी, ऐसे ही हरियाणा के पुराने आर्य पुरुषों के बारे में थोड़ा-थोड़ा अवश्य प्रकाश डालें। पूर्व पुरुषों का जीवन हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत होता है।

महाशय श्रीपाल आर्य वैदिक मिशनरी
आर्य भवन, खेड़ा हटाना, जनपद बागपत (उ० प्र०)

अप्रैल २०१५ के अंक में शांतिप्रवाह में आपने वेदों के बारे में फैले भ्रम का सफलतापूर्वक निवारण किया है। साधुवाद! वेद तो प्राणिमात्र से मित्रता का व्यवहार करने की शिक्षा देते हैं, मांसाहार की नहीं। डॉ० विवेक आर्य द्वारा प्रस्तुत 'अनुभव की बात' ने बहुत प्रभावित किया। इतना बड़ा व्यवसायी, जिसके बारे में हम बचपन से ही सुनते आए हैं, धन के बारे में इतने उत्कृष्ट विचार रखता था। सचमुच ऐसे व्यक्ति कम ही होते हैं। बेटी बचाओं के संबंध में भी प्रेरणादायक सामग्री पढ़ने को मिली। बाल वाटिका बच्चों के साथ-साथ बड़ों का भी मनोरंजन करती है।

हेमन्त प्रताप सोनी
नीमराणा, जिला अलवर, राजस्थान

चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

शांतिधर्मी के संचालक और प्रधान सम्पादक व आर्यजगत् के महान् भजनोपदेशक श्री पण्डित चन्द्रभानु आर्य के विराट् व्यक्तित्त्व को जानने और जनाने के लिए 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व' बृहदाकार ग्रंथ पर पिछले एक वर्ष से कार्य चल रहा है। इस ग्रंथ में पण्डित जी की रचनाओं, जीवन यात्रा, संस्मरणों; साहित्यकार, कवि और उपदेशक के रूप में उनके योगदान पर प्रकाश डाला जाएगा। उनके सभी परिचितों, मित्रों, सहयोगियों, संबंधियों, श्रद्धालुओं, शिष्यों, संबंधित संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि उनसे संबंधित संस्मरण, चित्र, आदि या किसी पुस्तक, स्मारिका आदि में उनका उल्लेख यदि आपके पास उपलब्ध है तो कृपया डाक या ईमेल से भिजवाने की कृपा करें। अन्यथा हमें सूचित करने का कष्ट करें। हम स्वयं आकर उन्हें स्केन/फोटोप्रति के रूप में प्राप्त करेंगे। शांतिधर्मी में प्रकाशित और अभी प्राप्त हो रहे संस्मरणों का भी उक्त ग्रंथ में सादर उपयोग किया जाएगा।

सम्पादक शांतिधर्मी,
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जींद-१२६१०२
EMail- shantidharmijind@gmail.com
दूरभाष : 094165 45538, 094162 53826, 098964 12152
निवेदक : रमेशचन्द्र आर्य, सहदेव शास्त्री, रवीन्द्र कुमार आर्य (पुत्र)

श्रद्धांजली/संस्मरण

तपोनिष्ठ भजनोपदेशक, वैदिक धर्म के समर्पित प्रचारक, शांतिधर्मी के संस्थापक, संचालक व सम्पादक

स्व० श्री चन्द्रभानु आर्योपदेशक के प्रेरक संस्मरण

सुख सुविधा की चिन्ता नहीं

राममन्दिर आन्दोलन के प्रचार के दौरान कई बार पंडित जी के साथ जाने का अवसर मिला। राजपुरा भैण और संभवतः गुलकणी में प्रचार किया। कहीं भोजन नहीं कर पाए। रात्रि हो गई। पास में रामराय संस्कृत पाठशाला में चले गए। संभवतः भोजन भी मिलेगा और निवास तो मिलेगाा ही। देर हो गई थी। वहाँ जो व्यक्ति थे उनसे भोजन के बारे में पूछा। उसने कहा– रोटी तो हैं और कुछ नहीं है साथ में। पंडित जी शांत स्वभाव से बोले– अरे, नमक तो होगा। नमक के साथ रोटी खाई, पानी पिया और संतुष्ट हो गए। बिना बिस्तर के तख्त पर सो गए। उन्होंने प्रचार कार्य के दौरान सुख सुविधाओं की परवाह नहीं की। वे बहुत याद आते हैं जब कुछ उपदेशक बढ़िया भोजन होने पर भी अतिरिक्त मक्खन ही मांग करते हैं। (जैसा ईश्वर चन्द्र आर्य, प्रियंका प्रैस, जींद ने बताया)

इसी प्रकार की घटना सुभाष बंसल ने बताई– श्री सुभाष बंसल उचाना मण्डी में व्यवसायी हैं। उनके पिताश्री श्री भगत टेकचन्द जी एक सच्चे महात्मा और संत पुरुष थे। हमने उनके दर्शन नहीं किये। पिताजी से उनके बड़े अच्छे संबंध थे। वे उनके गांव में कई बार प्रचारार्थ गए। सुभाष जी ने बताया कि एक बार पण्डित चन्द्रभानु जी प्रचारार्थ आए, देर हो गई थी। भोजन की बात पर उन्होंने कहा– जो कुछ बना है वही दे देना और कुछ नहीं बनाना। खिचड़ी बनी थी। पण्डित जी ने बड़ी प्रसन्नता से खाई। उन्होंने कभी भोजन में ना नचुक नहीं की। हमारी माता जी उनकी पार्टी आने पर बड़ी प्रसन्नता और श्रद्धा से भोजन बनाती थी। सुभाष जी ने प्रसंगवश एक अन्य उपदेशक के बारे में भी बताया। वे जींद जिले के ही थे। नाम मैं जान–बूझ कर नहीं लिख रहा हूँ। उनको सायंकाल दूध पीने को दिया गया। गिलास छोटा था। वे थोड़ा दूध देखकर नाराज हुए। बोले– 'लै मेरे कान मैं घाल दे।' यह बात किसी को अच्छी नहीं लगी। उसके बाद हमारी माताजी ने उनका भोजन बनाने में कभी ज्यादा रूचि नहीं दिखाई। पण्डित चन्द्रभानु का स्वभाव अलग था। वे मेजबान पर कभी बोझ नहीं बनते थे। जैसी व्यवस्था होती, उसी में प्रसन्न रहते थे।

आर्यों के कभी टोटा नहीं आता।

उनका आशावाद गजब का था। एक बार किसी प्रसंग में उन्होंने श्री रामफल आर्य लोहचब को कहा– आर्यों को कभी टोटा नहीं आता। वे कई देर इस पर विचार करते रहे। फिर इसका कारण पूछा– पण्डित जी ने कहा– क्योंकि वे बैल (व्यसन) करते नहीं, फिजूलखर्ची करते नहीं, पूर्ण पुरुषार्थ करते हैं और ईश्वर विश्वासी होते हैं, इसलिए आर्यों को कभी टोटा नहीं आता।

(जैसा रामफल आर्य, लोहचब ने बताया)

मैं तो चन्द्रभान बनूँगा।

समय के अनुसार हमें भी उपदेशकी की ट्रेनिंग मिलती रही। बड़े भाई रमेशचन्द्र कई बार सहयोगी (टेकिया) के रूप में प्रचार में गए। मैं भी कई बार गया। यह हाट (जिला जींद) गाँव की घटना है। जब मैं उन्नीस या बीस साल का था। कहते हैं मेरी शकल पिताजी से बहुत मिलती है। वहाँ के पुराने कार्यकर्त्ता थे– प्रभाराम आर्य। (अब स्वर्गीय) उन्होंने मुझे बताया– भाई, तेरे पिताजी हमारे गाँव में पहली बार तेरी उमर में आए थे। इनकी चर्चा दूर–दूर तक फैल रही थी– 'भई, चन्द्रभान ब्रह्मचारी, बहुत बढ़िया गावै है।' हम इनको अपने गाँव में लाए थे। बुलाए थे तीन दिन के लिये, पर गांव की मांग पर एक सप्ताह प्रचार हुआ।

सारा गाँव इनका प्रचार सुनने आता था। इन्होंने गांव पर जादू कर दिया। इनके जाने के बाद गांव के नौजवान लड़के गली में खड़े होकर, ईंटों का बाजा (हारमोनियम) बनाकर बजाने की और इन जैसी ओजस्वी आवाज निकालने की कोशिश करते थे। हमने एक लड़के से पूछा– ये क्या कर रहे हो? तो उसने कहा–चन्द्रभान बनूँगा। इनके शरीर का सौष्ठव, डीलडौल और गंभीर गरजती आवाज गजब का प्रभाव डालते थे। जब से ब्रह्मचर्य की महिमा बताते थे तो इनके स्वास्थ्य को देखते हुए और किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती थी। जब से वीर रस की कथाएँ सुनाते थे तो लोगों की रगों में तेजी से खून दौड़ने लगता था।–– उसके बाद तो ये हमारे गांव में सैंकड़ों बार आए।

आज के लड़के सलमान खान बनना चाहते हैं, तब लड़के चन्द्रभान बनना चाहते थे। चन्द्रभान भी तभी बने क्योंकि बचपन में चन्द्रभान 'भीष्म' बनना चाहते थे।

धैर्य की प्रतिमूर्ति–

मेरा दिल्ली में बी० एड० में दाखिला हुआ। मुझे लालबहादुर शास्त्री विद्यापीठ से शिक्षा–शास्त्री करनी थी। दिल्ली में निवास चाहिए था। होटल या किराए के मकान का खर्च उठाना मुश्किल था। पिताजी किसी आर्यसमाज में मेरा ठिकाना ढूंढ़ने मेरे साथ गए। मण्डल कमीशन के खिलाफ जबरदस्त आन्दोलन हो रहा था। रेलगाड़ी से दिल्ली पहुँच गए। दिल्ली में इक्का–दुक्का बस चल रही थी। महरौली तक की बस मिल गई। महरौली संभवतः फतेहपुर, खानपुर (वहाँ हमारे गाँव के व्यक्ति रहते हैं) गोमठ, स्वामी कर्मपाल– एक दो और आर्यसमाज– अंत में महरौली। कहीं कोई व्यवस्था नहीं बनी। आर्यसमाज सारे रजिस्टर्ड थे। उनसे कोई परिचय थी नहीं था। गोमठ में स्वामी कर्मपाल थे। वह दूर दराज था। यह सारा रास्ता मैंने और पिताजी ने पैदल ही तय किया। मेरे कन्धे पर बिस्तर और भोजन के बर्तनों का बैग था। इस दौरान उनके चेहरे पर निराशा या आक्रोश की झलक तक नहीं देखी। वापसी में महरौली से बस मिल गई। गौतमनगर गुरुकुल पहुँचे। पिताजी ने आचार्य हरिदेव जी (स्वामी प्रणवानन्द) से पूछा। उन्होंने कहा– क्यों नहीं, पण्डित जी, आपका गुरुकुल है, आपका अधिकार है। वहाँ गुफा में व्यवस्था हो गई। पाकशाला के नीचे (बेसमेंट) के कमरे को गुफा कहते थे। वहाँ रहकर बी० एड० की।

स्वर्गीय पं० चन्द्रभानु जी से मेरा परिचय

पूज्य पं० चन्द्रभानु जी आर्योपदेशक से मेरा सम्पर्क लगभग ४५ वर्ष तक रहा। आचार्य बलदेव जी ने आर्ष गुरुकुल कालवा को सन् १९७१ में संभाला था। मैं गुरुकुल में आरम्भ से ही सरक्षक पद पर कार्यरत हूँ। आचार्य जी ने पण्डित जी को जींद जिले में वैदिक धर्म प्रचारार्थ और गुरुकुल कालवा के अन्न–धन संग्रहणार्थ आमंत्रित किया था। पं० चन्द्रभानु जी आर्य रात्रि में ग्रामों में भजन मण्डली के साथ प्रचार करते और दिन में गुरुकुल में भोजन विश्राम आदि करते थे। तब से अब तक परिचय बना रहा। जींद जिले के अनेक गुरुकुल, गोशाला, आश्रमों के उत्सवों पर आपके भजनोपदेश श्रवण किये हैं। आर्ष गुरुकुल कालवा, राष्ट्रिय गौशाला धड़ौली, बाबा फूल साध उचानाखुर्द, बलिदान स्मारक गुलकणी, योगाश्रम बीबीपुर, कन्या गुरुकुल जुलाना आदि और आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, तथा खनौरी, पातडां पंजाब में आपके प्रचार सुने हैं। आप कार्यक्रमों में मिलते तब मुझे जींद अपने निवास पर आने को अवश्य कहते। मैं अनेक बार आपके आवास पर पहुंचता। आपकी धर्मपत्नी जी और सुपुत्र सब प्रकार सेवा में तत्पर रहते। पं० जी अपने घर पर मुझसे सामवेद पारायण यज्ञ भी करवाया। अनेक बार अपने मासिक पूर्णिमा के सत्संगों में मुझसे यज्ञ करवाते रहे।

'शांतिधर्मी' मासिक पत्रिका के माध्यम से असपने अपना जीवन सफल कर लिया। पत्रिका चलाना बड़ें संगठन, आश्रम, गुरुकुलों का काम है। आपने यह कार्य भी सरलता से अपने बल पर कर लिया। इस पत्रिका में मेरे भी लेख यदा कछा प्रकाशित होते रहते हैं। अभी दो वर्ष पूर्व आपने मेरे द्वारा लिखित 'महर्षि दयानन्द की अमृत–वर्षा' लघु पुस्तिका प्रकाशित की। आपने मेरी पुस्तक 'वैदिक मानव निर्माण' की भूमिका भी लिखी थी।

आर्य जगत् के महान् भजनोपदेशक श्री पं० चन्द्रभानु आर्य आर्य के विराट् व्यक्तित्त्व को जानने औश्र जनाने के लिए 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व औश्र कृतित्त्व' ग्रंथ का प्रकाशन कार्य चल रहा है। इस कार्य की सफलता के लिए परमपितापरमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि यह कार्य शीघ्रतिशीघ्र पूर्ण होवे।

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती
संरक्षक आर्ष गुरुकुल कालवा,
जींद (हरयाणा)

वेद में सरस्वती

❑सहदेव समर्पित

वेद सांसारिक इतिहास और भूगोल के पुस्तक नहीं हैं। इतिहास और भूगोल बदलते रहते हैं, वेद बदलते नहीं हैं।

सरस्वती नदी की खोज एक ऐतिहासिक घटना है। प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में सरस्वती का अनेकशः उल्लेख है। यह मात्र एक नदी नहीं है, अपितु हमारी संस्कृति का एक अमूल्य स्रोत है। सरस्वती हमारे इतिहास का स्रोत भी है। अधिकतर नगरों का विकास नदियों के किनारे हुआ। इस दृष्टि से सरस्वती के मूल मार्ग की खोज से आर्यावर्त्त के अज्ञात इतिहास पर भी प्रभूत प्रकाश डाला जा सकता है। जिन विनष्ट सभ्यताओं को वैदिक संस्कृति से भिन्न कहा जाता रहा है, वे भी वैदिक सभ्यता ही हैं, इस तथ्य को और अधिक दृढ़ता से प्रमाणित किया जा सकता है। सरस्वती शोध संस्थान के माध्यम से श्री दर्शनलाल जैन के परम पुरुषार्थ और वर्तमान सरकार द्वारा इस राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य में रूचि लेने के कारण ऐसी संभावनाएँ दिखाई देने लगी हैं कि सरस्वती के मार्ग को खोज लिया गया है। नासा द्वारा लिए गए चित्रों के माध्यम से भी इसकी पुष्टि होती है।

दो धाराएँः-

सरस्वती नदी के संबंध में दो प्रकार की विचारधाराएँ हैं। एक तो वह विचारधारा है जो भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की प्रत्येक गौरवशाली वस्तु को मिथक मानती है। उन्होंने अपनी इतिहास दृष्टि की कुछ सीमाएँ निर्धारित की हुई हैं। वे उससे बाहर कुछ प्रमाणित होता हुआ नहीं देख सकते। वे सरस्वती नदी को भी मिथक मानते हैं। यमुनानगर के गांव में मिली जलधारा सरस्वती ही प्रमाणित हो जाए तो यह आवश्यक नहीं है कि वे अपनी भूल का सुधार कर लेंगे। इस विषय में कुछ वर्ष पहले हमारी प्रो० सूरजभान जी से दैनिक भास्कर के 'पाठकों के पत्र' कालम के माध्यम से बहस हुई थी। जब हमने वैदिक साहित्य के संदर्भों का उल्लेख किया तो वे वैश्विक समुदाय की मान्यताओं का आश्रय लेने लगे। यानि हमारे साहित्य में क्या है- इसका निर्णय करने के लिए हम दूसरे देशों के लोगों के मुंह की ओर देखेंगे! हमारे साहित्य में क्या है, यह हमें वे लोग बताएँगे जिनमें संस्कृत में पत्र लिखने की योग्यता भी नहीं थी। जो हमारे देश के इतिहास को हीन बताकर, वेदों को गडरियों के गीत बताकर हमारी वेदों के प्रति श्रद्धा को समाप्त करना चाहते थे और हमें ईसाई मत की ओर आकर्षित करना चाहते थे, उनसे सत्य की आशा रखना केवल भोलापन ही है। सरस्वती, रामायण, महाभारत, आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य होना-- ऐसे ही कुछ विषय हैं जिनको मिथक बताने के लिए वे पीढ़ियों से तुले हुए हैं। जिस प्रकार रामसेतु के पुरातात्त्विक साक्ष्य मिलने पर भी उनकी धारणा नहीं बदली, उसी प्रकार सरस्वती नदी मिल जाने पर भी वे सरस्वती को मिथक कहना छोड़ देंगे, इस बात की उनसे आशा नहीं की जा सकती।

सरस्वती के संबंध में दूसरी विचारधारा इस देश के गौरवमय अतीत में विश्वास रखने वालों की है। इस देश की संस्कृति कृषि प्रधान रही है। ऐसे में नदियों का संबंध जीवन में समृद्धि से रहना स्वाभाविक ही है। वैदिक ज्ञान के अभाव में जैसे अन्य जड़ वस्तुओं की पूजा होने लगी, वैसे ही नदियों की भी होने लगी होगी, इसमें भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इस प्रकार सरस्वती आस्था और श्रद्धा का केन्द्र बन गई। लेकिन आस्था कोई अकादमिक प्रमाण नहीं है। लोगों की आस्थाएँ भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। जब हमारे प्राचीन साहित्य में सरस्वती नदी के प्रभूत उल्लेख हैं तो हमें आस्था की आड़ लेने की क्या आवश्यकता है। अब पुरातात्त्विक साक्ष्य मिलने के बाद तो इसकी प्रामाणिकता में संदेह का कोई स्थान ही नहीं है।

वेदों में सरस्वती

जब दूसरी विचारधारा के लोग वेदों में सरस्वती नदी का वर्णन होने की बात करते हैं तो लगता है कि एक झूठ हजार बार बोलने के कारण सच हो गया है। जो षड्यंत्र वेद के पाश्चात्य भाष्यकारों ने रचा था, वह सफल हो गया है। ब्रिटिश शासन के दौरान और स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में संस्कृत और वेद विद्या का इतना ह्रास हुआ है कि इस भ्रम के विरुद्ध उठने वाले स्वर भी बहुत कम हो गए हैं। वेदों में सरस्वती नदी को वे लोग ढूंढ रहे हैं जो वेद को अपौरुषेय मानते हैं। अभी आर एस एस से जुड़े एक पूर्व सांसद का लेख आया। वे लिखते हैं कि ऋग्वेद के एक राजा सुदास का राज्य सरस्वती नदी के तट पर था। तो क्या

वेदों की रचना राजा सुदास के बाद हुई है? वे एक मंत्र को गृत्समद् का रचा बताते हैं। तो क्या वेद मंत्रों की रचना ऋषियों ने की है? यह एक उदाहरण मात्र है। वेद के अनुयायी कहे जाने वाले लोग वेद के संबंध में कितने भ्रम में हैं, यह बात पीड़ादायक है।

वेद क्या है?

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। ईश्वर नित्य है। उसका ज्ञान भी नित्य है। उसके ज्ञान में कमी या बढ़ोतरी नहीं हो सकती। सृष्टि प्रवाह से अनादि है। हर सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर मनुष्यों के कल्याण के लिए यह ज्ञान देता है। यह ईश्वर का सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है, मनुष्यों के लिए सम्पूर्ण है। वेद ऋषियों के हृदय में प्रकाशित होता है। ऋषि मंत्रों को बनाने वाले नहीं हैं, वे मंत्रों के द्रष्टा हैं। उन्होंने उनके अर्थ जाने हैं। वेद सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। इसमें सांसारिक वस्तुओं पहाड़ों, नदियों, देशों, मनुष्यों का नाम नहीं हो सकता है। वेद सांसारिक इतिहास और भूगोल के पुस्तक नहीं हैं। इतिहास और भूगोल बदलते रहते हैं, वेद बदलते नहीं हैं। वेद में अनित्य इतिहास नहीं हो सकता है। भारतीय परम्परा में यह सर्वतंत्र सिद्धान्त है। यदि वेद में सांसारिक वस्तुओं के या व्यक्तियों के नाम या इतिहास होंगे तो वेद शाश्वत नहीं हो सकता।

वेद में नाम

वेद में सरस्वती, गंगा, यमुना, कृष्ण आदि ऐतिहासिक शब्द आते हैं। पर ये ऐतिहासिक वस्तुओं या व्यक्तियों के नाम नहीं हैं। वेद में इनके अर्थ कुछ और हैं। इस बात को समझने के लिये तीन बातों का जान लेना आवश्यक है।

१- वेद शाश्वत हैं। ये वस्तु या व्यक्ति अनित्य हैं।

२- सांसारिक वस्तुओं के नाम वेद से लेकर रखे गए हैं, न कि इन नाम वाले व्यक्तियों या वस्तुओं के बाद वेदों की रचना हुई है। जैसे किसी पुस्तक में यदि इन पंक्तियों के लेखक का नाम आता है तो वह इस लेखक के बाद की पुस्तक होगी। इस विषय में मनु की साक्षी भी है।

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेद शब्देभ्यः एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे।।

३- वेद के शब्द यौगिक हैं, रूढ़ नहीं हैं। हम किसी वस्तु को नदी क्यों कहते हैं? क्योंकि हम ऐसी रचना को जिसमें प्रभूत जल बहता है, नदी कहते सुनते आए हैं। यह रूढ़ि है। वेद में ऐसा नहीं है। वेद के शब्दों के अर्थ उन शब्दों में निहित होते हैं। जैसे जो वस्तु नद=नाद करती है, वह नदी है। यह निर्वचन पद्धति है। ऋषि दयानन्द और अन्य सभी प्राचीन यास्क आदि ऋषि मुनि इसी पद्धति को स्वीकार करते हैं। इस बात को समझकर आईये हम प्रकरणवश वेद में सरस्वती नदी की बात पर विचार करते हैं-

वेद में सरस्वती नाम है, अनेकशः है। मुख्य रूप से ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के ९५-९६ सूक्तों में सरस्वती का उल्लेख है। इनके अलावा भी वेद में अनेक मंत्र हैं जिनमें सरस्वती का उल्लेख है। लेकिन यह सरस्वती किसी देश में बहने वाली नदी नहीं है।

सरस्वती का अर्थ

वेद के अर्थ समझने के लिए हमारे पास प्राचीन ऋषियों के प्रमाण हैं। निघण्टु में वाणी के ५७ नाम हैं, उनमें से एक सरस्वती भी है। अर्थात् सरस्वती का अर्थ वेदवाणी है। ब्राह्मण ग्रंथ वेद व्याख्या के प्राचीनतम ग्रंथ है। वहाँ सरस्वती के अनेक अर्थ बताए गए हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

१- वाक् सरस्वती।। वाणी सरस्वती है। (शतपथ ७/५/१/३१)

२- वाग् वै सरस्वती पावीरवी।। (७/३/३९) पावीरवी वाग् सरस्वती है।

३- जिह्वा सरस्वती।। (शतपथ १२/९/१/१४) जिह्वा को सरस्वती कहते हैं।

४- सरस्वती हि गौः।। वृषा पूषा। (२/५/१/११) गौ सरस्वती है अर्थात् वाणी, रश्मि, पृथिवी, इन्द्रिय आदि। अमावस्या सरस्वती है। स्त्री, आदित्य आदि का नाम सरस्वती है।

५- अथ यत् अक्ष्योः कृष्णं तत् सारस्वतम्।। (१२/९/१/१२) आंखों का काला अंश सरस्वती का रूप है।

६- अथ यत् स्फूर्जयन् वाचमिव वदन् दहति। ऐतरेय ३/४, अग्नि जब जलता हुआ आवाज करता है, वह अग्नि का सारस्वत रूप है।

७- सरस्वती पुष्टिः, पुष्टिपत्नी। (तै० २/५/७/४) सरस्वती पुष्टि है और पुष्टि को बढ़ाने वाली है।

८-एषां वै अपां पृष्ठं यत् सरस्वती। (तै० १/७/५/५) जल का पृष्ठ सरस्वती है।

९-ऋक्सामे वै सारस्वतौ उत्सौ। ऋक् और साम सरस्वती के स्रोत हैं।

१०-सरस्वतीति तद् द्वितीयं वज्ररूपम्। (कौ० १२/२) सरस्वती वज्र का दूसरा रूप है।

ऋग्वेद के ६/६१ का देवता सरस्वती है। स्वामी दयानन्द ने यहाँ सरस्वती के अर्थ विदुषी, वेगवती नदी, विद्यायुक्त स्त्री, विज्ञानयुक्त वाणी, विज्ञानयुक्ता भार्या आदि किये हैं।

सात बहनें:-

इसी सूक्त के मंत्र ९ में 'विश्वा स्वसृ', मंत्र १० में

'सप्त स्वसृ' मंत्र १२ में 'सप्त धातुः' पाठ हैं। वेदार्थ प्रक्रिया से अनभिज्ञ भक्तों ने पहले तो सरस्वती का अर्थ कोई विशेष नदी समझा, फिर उसकी सात बहनों का वर्णन भी वेद में दिखा दिया। जबकि यहाँ गंगा आदि अन्य नदियों का नाम भी नहीं है। सायणाचार्य भी अनेक स्थानों पर सात बहनों में गंगा आदि की कल्पना करते हैं लेकिन १२ मंत्र में वे भी स्वीकार करते हैं – 'सप्त धातवो अवयवाः गायत्र्याद्याः यस्याः।' जिसके गायत्री आदि सात अवयव हैं। १० वे मंत्र में भी 'सप्त स्वसा गायत्र्यादीनि सप्त छंदांसि स्वसारो यस्यास्तादृशी।' यहाँ भी सात छंदों वाली वेद वाणी का ही ग्रहण है। ११ वें मंत्र में उसको पृथिवी और अंतरिक्ष को सर्वत्र अपने तेज से पूर्ण करने वाली कहा गया है। स्पष्ट है कि यह आदिबद्री से बहने वाली नदी का वर्णन नहीं है।

> कहा जाता है कि महाभारत में सरस्वती नदी का २३५ बार उल्लेख है और इसमें इसकी स्थिति को भी प्रदर्शित किया गया है। ३/८३ के अनुसार कुरुक्षेत्र सरस्वती के दक्षिण में है और दृषद्वती के उत्तर में है। प्राचीन पुराणों, नवीन पुराणों, भारत, रामायण आदि ग्रंथों में सरस्वती के अनुसंधान करने चाहिएँ, वेद में नहीं। भारतीय इतिहास ग्रंथों में यह स्पष्ट रूप से नदी है।

नहुष को घी दूध दिया?

सरस्वती शब्द को एक विशेष नदी मानकर भाष्यकार किस प्रकार भ्रम में पड़े हैं, जैसे एक झूठ को सिद्ध करने के लिए हजार झूठ बोले जा रहे हों, इसका एक उदाहरण ऋग्वेद के इस मंत्र से समझा जा सकता है– (७/९५/२)

एका चेतत् सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्यः आ समुद्रात्।
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृतं पयो दुदुहे नाहुषाय।।

सायणाचार्य ने यहाँ सरस्वती को एक विशेष नदी माना और कल्पना के घोड़े पर सवार हो गए। वे इसका अर्थ करते हैं– (नदीनां शुचिः) नदियों में शुद्ध (गिरिभ्यः आसमुद्रात् यती) पर्वतों से समुद्र तक जाती हुई (एका सरस्वती) एक सरस्वती नदी ने (अचेतत्) नाहुष की प्रार्थना जान ली और (भुवनस्य भूरेः रायः चेतन्ती) प्राणियों को बहुत से धर्म सिखाती हुई (नाहुषाय घृतं पयो दुदुहे) नाहुष राजा के एक हजार वर्ष के यज्ञ के लिए पर्याप्त घी दूध दिया।

यहाँ नहुष के अर्थ पर विचार न करने के कारण इस इतिहास की कल्पना करनी पड़ी। निघण्टु के अनुसार मनुष्य के २५ पर्याय हैं उनमें एक नहुष भी है। (नि० २/३) घृतं, पयः भी वेद विद्या है। (शतपथ ब्राह्मण ११/५/७/५)

आर्ष वेदार्थ शैली के अनुसार इस मंत्र का अर्थ इस प्रकार है– (श्री पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार)

(एका नदी शुचिः गिरिभ्यः आसमुद्रात् यती) जैसे एक नदी गिरियों से शुद्ध पवित्र जल वाली समुद्र तक जाती हुई जानी जाती है। उसी प्रकार (सरस्वती एका) एक अद्वितीय सर्वश्रेष्ठ उत्तम ज्ञानवाली प्रभु वाणी (गिरिभ्यः) ज्ञानोपदेष्टा गुरुओं से (आ समुद्रात्) जनसमूहरूप सागर तक प्राप्त होती हुई जानी जाती है। अर्थात् उससे लोग ज्ञान प्राप्त करें। वह (भुवनस्य भूरे चेतन्ती) संसार और जन्तु जगत् को प्रभूत ऐश्वर्य का ज्ञान कराती हुई (नाहुषाय) मनुष्य मात्र को (घृतं पयः दुदुहे) प्रकाशमय, पान करने योग्य रस के तुल्य ज्ञान रस को बढ़ाती है।

दस नदियाँ

प्रकरणवश एक मंत्र पर और विचार करना उचित होगा, जिसमें गंगा आदि दस नदियों के नाम बताए गए हैं।

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया।।

(ऋ० १०/७५/५)

सायण ने इस मंत्र में इन नामों वाली दस नदियों का वर्णन माना है और उनको कहा गया है कि आप हमारी स्तुतियों को सुनो। सौभाग्य से इस मंत्र पर निरुक्त के निर्वचन उपलब्ध हैं। (निरुक्त ५/२६) उदाहरणतः 'गङ्गा गमनात्' किसी वस्तु की गङ्गा संज्ञा उसके गमन करने के कारण से है। जब किसी वस्तु की नदी से उपमा दी गई है तो उसके कुछ गुण तो नदी से मिलते ही हैं। लेकिन वेद का तात्पर्य भौगोलिक स्थितियों का वर्णन करने से नहीं है। 'नदी' वह है जो 'नाद' करती है। (नदति) ये शरीर की नाड़ियाँ हैं। जिनमें से एक के ही गुणों के कारण कई नाम हैं। स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में इस पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला है। ग्रंथप्रामाण्याप्रामाण्य विषय में प्रश्न हुआ– गंगा, यमुना, सरस्वती आदि का वर्णन वेदों में भी है, फिर आप उनको तीर्थ के रूप में क्यों नहीं मानते। स्वामी दयानन्द लिखते हैं– हम मानते हैं कि उनकी नदी संज्ञा है, परन्तु वे गङ्गादि तो नदियाँ हैं। उनसे जल, शुद्धि आदि से जो उपकार होता है उतना मानता हूँ। वे पापनाशक और दुःखों से तारने वाली नहीं हैं, क्योंकि जल, स्थल आदि में वह सामर्थ्य नहीं है।

स्वामी दयानन्द के अनुसार इडा, पिङ्गला, सुषुम्णा और कूर्मनाड़ी आदि की गङ्गा आदि संज्ञा है। योग में धारणा आदि की सिद्धि के लिए और चित्त को स्थिर करने के लिए

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

जातिवाद : सिक्के के दो पहलू

❑डॉ. विवेक आर्य, drvivekarya@yahoo.com

इतिहास में ऐसी घटनाएँ स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं जिनको आज के युग में प्रचारित किया जाए तो निश्चित रूप से दोनों पक्षों के लिए प्रेरणा की संजीवनी सिद्ध हो सकती हैं।

रतलाम जिले के एक हेलमेट पहने दूल्हे की तस्वीर इंटरनेट पर प्रसारित हुई। दूल्हा दलित समुदाय से सम्बंधित था। उस गाँव के सवर्ण लोगों को दलित समाज से सम्बंधित व्यक्ति द्वारा घोड़ी की सवारी करने पर आपत्ति है। इस प्रकार की घटनाएँ निन्दनीय हैं और हमारे समाज की एकता के लिए घातक हैं। यह हमारे संविधान के लिए भी एक चुनौती है और निश्चित रूप से उनके मानव अधिकारों का उल्लंघन है। सबसे खतरनाक बात यह है कि जो लोग सदियों से हिन्दू समाज को तोड़ने के लिए प्रयासरत हैं, वे इस प्रकार की घटनाओं का एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। उनका उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य वैमनस्व को बढ़ावा देकर अपना राजनैतिक उल्लू सीधा करना होता है। रूढ़िवादी सामन्ती विचारधारा के लोग यदि जन्म के आधार पर किसी व्यक्ति के साथ इस प्रकार का अमानुषिक आचरण करते हैं तो उनका हर स्तर पर विरोध होना चाहिए, पर उनका विरोध साध्य नहीं साधन है। साध्य है समाज के सभी वर्गों में सामंजस्य स्थापित करना और हर प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना।

समाज में नकारात्मक होता है तो सकारात्मक भी कम नहीं होता। उनका प्रचार करने से ही समाज में भेदभाव को समाप्त किया जा सकता है। आज जातिवाद उस प्रकार की समस्या नहीं है जैसी कि सौ दो सौ साल पहले थी। आज जातिवाद की समस्या अधिकांश रूप से राजनैतिक है और इसी कारण से यह पहले की अपेक्षा अधिक भयावह है। जातिवाद को समाप्त करने के प्रयास करने वालों का प्रचार तंत्र इसको फैलाने वालों के प्रयासों और प्रचार तंत्र की अपेक्षा नगण्य है। आर्यसमाज ने अपने प्रारंभिक काल से ही सामाजिक जातिवाद को समाप्त करने के सार्थक प्रयास किये थे और इन जंजीरों को तोड़ने में काफी हद तक सफलता प्राप्त की थी। गांधीजी ने तो केवल उनका नाम बदला था। इतिहास में ऐसी घटनाएँ स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं जिनको आज के युग में प्रचारित किया जाए तो निश्चित रूप से दोनों पक्षों के लिए प्रेरणा की संजीवनी सिद्ध हो सकती हैं। हम बुराई के स्थान पर अच्छाई वाले दृष्टान्तों को प्रचारित कर सामाजिक सन्देश देना चाहते हैं जिससे सकारात्मक माहौल बने।

समाज में नकारात्मक होता है तो सकारात्मक भी कम नहीं होता। उनका प्रचार करने से ही समाज में भेदभाव को समाप्त किया जा सकता है।

सोमनाथ जी की माता का अमर बलिदान

लाला सोमनाथ जी रोपड़ आर्यसमाज के प्रधान थे। आपके मार्गदर्शन में रोपड़ आर्यसमाज ने रहतियों की शुद्धि की थी। यों तो रहतियों का सम्बन्ध सिख समाज से था मगर उनके साथ अछूतों सा व्यवहार किया जाता था। उन्हें जनेऊ पहनाकर सम्मानित स्थान देने के कारण रोपड़ के पौराणिक समाज ने आर्यसमाजियों का बहिष्कार कर दिया एवं सभी कुओं से आर्यसमाजियों को पानी भरने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। नहर का गंदा पानी पीने से अनेक आर्यों को पेट के रोग हो गए जिनमें से एक सोमनाथ जी की माताजी भी थीं। उन्हें आन्त्रज्वर हो गया था। वैद्य जी के अनुसार ऐसा गन्दा पानी पीने से हुआ था। सोमनाथ जी के समक्ष अब एक रास्ता तो क्षमा मांगकर समझौता करने का था और दूसरा रास्ता सब कुछ सहते हुए परिवार की बलि देने का था। आपको चिंताग्रस्त देखकर आपकी माताजी ने आपको समझाया कि एक न एक दिन तो उनकी मृत्यु निश्चित है फिर उनके लिए अपने धर्म का परित्याग करना गलत होगा, इसलिए धर्म का पालन करने में ही भलाई है। सोमनाथ जी माता का आदेश पाकर चिंता से मुक्त हो गए एवं और अधिक उत्साह से कार्य करने लगे।

माता जी रोग से स्वर्ग सिधार गई, तब भी विरोधियों के दिल नहीं पिघले। विरोध दिनो-दिन बढ़ता ही गया। इस विरोध के पीछे गोपीनाथ पंडित का हाथ था। वह पीछे से पौराणिक हिन्दुओं को भड़का रहा था। सनातन धर्म गजट में गोपीनाथ ने अक्टूबर 1900 के अंक में आर्यों के खिलाफ ऐसा भड़काया कि आर्यों के बच्चे तक प्यास से तड़पने लगे थे। सख्त से सख्त तकलीफें आर्यों को दी गई। लाला सोमनाथ को अपना परिवार रोपड़ से जालंधर ले जाना पड़ा। जब शांति की कोई आशा न दिखी तो महाशय इंदरमन आर्य लाल सिंह (जिन्हें शुद्ध किया गया था) और लाला सोमनाथ स्वामी श्रद्धानन्द (तब मुंशीराम जी) से मिले और सनातन गजट के विरुद्ध फौजदारी मुकदमा करने के विषय में उनसे राय मांगी। मुंशीराम जी उस काल तक अदालत में धार्मिक मामलों को लेकर जाने के विरुद्ध थे। कोई और उपाय न देख अंत में मुकदमा दायर हुआ, जिस पर सनातन धर्म गजट ने 15 मार्च 1901 के अंक में आर्यसमाज के विरुद्ध लिखा 'हम रोपड़ी आर्यसमाज का इस छेड़खानी के आगाज के लिए धन्यवाद अदा करते हैं कि उन्होंने हमें विधिवत् अदालत के द्वारा ऐलानिया जालंधर में निमंत्रण दिया हैं। जिसको मंजूर करना हमारा कर्तव्य है।' 3 सितम्बर 1901 को मुकदमा सोमनाथ बनाम सीताराम रोपड़ निवासी का फैसला भी आ गया। सीताराम को अदालत में माफीनामा पेश करना पड़ा।

इस प्रकार अनेक संकट सहते हुए आर्यों ने दलितोद्धार एवं शुद्धि के कार्य को किया था। मौखिक उपदेश देने में और जमीनी स्तर पर पुरुषार्थ करने में कितना अंतर होता है इसका यह यथार्थ उदाहरण है। सोमनाथ जी की माता जी का नाम इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। सबसे प्रेरणादायक तथ्य यह है कि किसी सवर्ण ने अछूतों के लिए अपने प्राण न्योछावर किये हों ऐसे उदाहरण केवल आर्यसमाज के इतिहास में ही मिलते हैं।

नारायण स्वामी जी और दलितोद्धार

आर्यसमाज के महान नेता महात्मा नारायण स्वामी जी का जीवन हम सबके लिये प्रेरणास्रोत है। स्वामी जी की कथनी और करनी में कोई भेद नहीं था। उनके जीवन के अनेक प्रसंगों में से दलितोद्धार से सम्बंधित दो प्रसंगों का पाठकों के लाभार्थ वर्णन करना चाहता हूँ। नारायण स्वामी जी तब मुरादाबाद आर्यसमाज के प्रमुख कर्णधार थे। आर्यसमाज में अनेक ईसाई एवं मुसलमान भाइयों की शुद्धि उनके प्रयासों से हुई थी जिसके कारण मुरादाबाद का आर्यसमाज प्रसिद्ध हो गया। मंसूरी से डॉ. हुकुम सिंह एक ईसाई व्यक्ति की शुद्धि के लिए उसे मुरादाबाद लाये।

उनका पूर्व नाम श्री राम था व वह पहले सारस्वत ब्राह्मण थे। ईसाईयों द्वारा बहला-फुसला कर किसी प्रकार से ईसाई बना लिए गए थे। आपकी शुद्धि करना हिन्दू समाज से पंगा लेने के समान था। मामला नारायण स्वामी जी के समक्ष प्रस्तुत हुआ। आपने अंतरंग में निर्णय लिया कि नाममात्र की शुद्धि का कोई लाभ नहीं है। शुद्धि करके उसके हाथ से पानी पीने का नम्र प्रस्ताव रखा गया जो स्वीकृत हो गया। यह खबर पूरे मुरादाबाद में आग के समान फैल गई। शुद्धि वाले दिन अनेक लोग देखने के लिए जमा हो गए। शुद्धि कार्यकर्म सम्पन्न हुआ एवं शुद्ध हुए व्यक्ति के हाथों से आर्यों द्वारा जल ग्रहण किया गया। अब घोर विरोध के दिन आरम्भ हो गए। 'निकालो इन आर्यों को जात से' 'कोई कहार इनको पानी न दे' 'कोई मेहतर इनके घर की सफाई न करे', 'कोई इन्हें कुँए से पानी न भरने दे' ऐसे ऐसे अपशब्दों से आर्यों का सम्मान किया जाने लगा। बात कलेक्टर महोदय तक पहुँच गई।

उन्होंने मुंशी जी को बुलाकर उनसे परामर्श किया। मुंशी जी ने सब सत्य बयान कर दिया तो कलेक्टर महोदय ने कहा कि आर्य लोग इसकी शिकायत क्यों नहीं करते। मुंशी जी ने उत्तर दिया। 'हम लोग स्वामी दयानंद के अनुयायी हैं। एक बार ऋषि को किसी ने विष दिया था। कोतवाल उसे पकड़ लाया। ऋषि ने कहा- इसे छोड़ दीजिये। मैं लोगों को कैद करने नहीं अपितु कैद से मुक्त कराने आया हूँ। ये लोग मूर्खतावश आर्यों का विरोध करते हैं। इन्हें ज्ञान हो जायेगा तो स्वयं छोड़ देंगे।' अंत में कोलाहल शांत हो गया और आर्य अपने मिशन में सफल रहे।

कुआँ नापाक हो गया-

एक अन्य प्रेरणादायक घटना नारायण स्वामी जी के वृन्दावन गुरुकुल प्रवास से सम्बंधित है। गुरुकुल की भूमि में गुरुकुल के स्वत्व में एक कुआँ था। उस काल में ऐसी प्रथा थी कि कुओं से मुसलमान भिश्ती तो पानी भर सकते थे मगर चर्मकारों को पानी भरने की मनाही थी। मुसलमान भिश्ती चाहते तो पानी चर्मकारों को दे सकते थे। कुल मिलाकर चर्मकारों को पानी मुसलमान भिश्तियों की कृपा से मिलता था। जब नारायण स्वामी जी ने यह अत्याचार

देखा तो उन्होंने चर्मकारों को स्वयं पानी भरने के लिए प्रेरित किया। चर्मकारों ने स्वयं से पानी भरना आरम्भ किया तो कोलाहल मच गया।

मुसलमान आकर स्वामी जी से बोले कि कुआँ नापाक हो गया है क्योंकि जिस प्रकार बहुत से हिन्दू हम को कुँए से पानी नहीं भरने देते उसी प्रकार हम भी इन अछूतों को कुँए पर चढ़ने नहीं देंगे। स्वामी जी ने शांति से उत्तर दिया 'कुआँ हमारा है। हम किसी से घृणा नहीं करते। हमारे लिए तुम सब एक हो। हम किसी मुसलमान को अपने कुँए से नहीं रोकते। तुम हमारे सभी कुओं से पानी भर सकते हो। जैसे हम तुमसे घृणा नहीं करते। हम चाहते हैं कि तुम भी चर्मकारों से घृणा न करो।' इस प्रकार एक अमानवीय प्रथा का अंत हो गया।

मनुष्यता से बड़ा कोई धर्म नहीं

अपनी खेती की देखभाल करके घर लौट रहे हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को रास्ते में सहसा किसी के चिल्लाने की ध्वनि सुनाई दी। शीघ्र जाकर देखा कि एक स्त्री को साँप ने काट लिया है। त्वरित् बुद्धि आचार्य को लगा कि यहाँ ऐसा कोई साधन नही है जिससे सर्प-विष को फैलने से रोका जाये। उन्होंने फौरन यज्ञोपवीत (जनेऊ) तोड़कर सर्प-दंश के ऊपरी हिस्से में मजबूती से बांध दिया। फिर सर्प-दंश को चाकू से चीरकर विषाक्त रक्त को बलात् बाहर निकाल दिया। उस स्त्री की प्राण-रक्षा हो गयी।

इस बीच गाँव के बहुत से लोग इकट्ठे हो गये। वह स्त्री अछूत थी। गाँव के पण्डितों ने नाराजगी प्रकट करते हुए कहा 'जनेऊ जैसी पवित्र वस्तु का इस्तेमाल इस औरत के लिये करके आपने धर्म की लुटिया डुबो दी। हाय! गजब कर दिया।' विवेकी आचार्य ने कहा 'अब तक नहीं मालूम तो अब से जान लीजिये, मनुष्य और मनुष्यता से बड़ा कोई धर्म नहीं होता। मैंने अपनी ओर से सबसे बड़े धर्म का पालन किया है।

रिश्तों से बड़ा दलितोद्धार

प्रोफेसर शेर सिंह पूर्व केंद्रीय मंत्री भारत सरकार के पिता अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध जमींदार थे। दलितों से छुआछूत का भेदभाव मिटाने के लिए उन्होंने अपने खेतों में बने कुएँ दलितों के लिए पानी भरने हेतु स्वीकृत कर दिए। प्रोफेसर शेर सिंह उस समय विद्यालय में पढ़ते थे। उस काल की प्रथा के अनुसार उनका विवाह निश्चित हो चुका था। जब कन्या पक्ष ने शेर सिंह जी के पिता के निर्णय को सुना तो उन्होंने सन्देश भेजा कि या तो दलितों के लिए कुँए से पानी भरने पर पाबन्दी लगा दें अन्यथा इस रिश्ते को समाप्त समझें। शेर सिंह जी के पिता ने रिश्तों को सामाजिक समरसता के सामने तुच्छ समझा और रिश्ता तोड़ना मंजूर किया, पर दलितों के साथ न्याय किया।

शेर सिंह जी के पिता ने रिश्तों को सामाजिक समरसता के सामने तुच्छ समझा और रिश्ता तोड़ना मंजूर किया, पर दलितों के साथ न्याय किया।

जब आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता और विद्वान् पंडित बुद्धदेव जी वेदालंकार को यह जानकारी मिली तो वे शेर सिंह जी के पिता से मिलने गए एवं उन्हें आश्वासन दिया कि उनकी निगाह में एक आर्य कन्या है जिनसे शेर सिंह जी का विवाह होगा। कालांतर में उन्होंने अपनी कन्या का विवाह जाति-बंधन तोड़कर शेरसिंह जी के साथ किया।

इस प्रकार के अनेक प्रसंग महाशय रामचन्द्र जी जम्मू, वीर मेघराज जी, लाला लाजपत राय, लाला गंगाराम जी स्यालकोट, पंडित देवप्रकाश जी मध्य प्रदेश, मास्टर आत्माराम अमृतसरी जी बरोदा, वीर सावरकर जी रत्नागिरी, स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली, पंडित रामचन्द्र देहलवी दिल्ली आदि के जीवन में मिलते हैं जिनके प्रचार प्रसार से जातिवाद उन्मूलन की प्रेरणा मिलती हैं। यही इस सिक्के के दो पहलू हैं कि दलितोद्धार के लिए दलितों पर अत्याचार के स्थान पर भेदभाव मिटाने वाली घटनाओं को प्रचारित किया जाना चाहिए।

बहादुरगढ़ में योग शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के तत्त्वाधान में 22 जून से 28 जून तक 'ब्रह्ममेधा' ध्यान योग विज्ञान शिविर का आयोजन पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के सान्निध्य में हो रहा है। भोजन व आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से नि:शुल्क रहेगी। पूर्ण जानकारी के लिये वानप्रस्थी ईशमुनि जी (98126 40989) व राजवीर जी आर्य (98117 78665) से सम्पर्क किया जा सकता है।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ (094160 54195)

सफलता को जानें

❑डॉ० सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी जवाहर नवोदय विद्यालय, खुंगा-कोठी, जींद-१२६११० (हरियाणा)

सफलता सर्वप्रिय शब्द है। अथर्ववेद में भी कहा गया है कि उन्नत होना और सफलता के लिए आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है। सभी व्यक्ति सफल होना चाहते हैं। सभी व्यक्तियों में कमोबेश सफलता की भूख पाई जाती है। एक छोटा सा बच्चा भी अपने प्रयासों में सफलता पाकर फूला नहीं समाता और अपेक्षित परिणाम न पाकर मुँह लटका लेता है, या रोने लगता है। आप कभी बच्चों को खेलते हुए देखिए, खेल में सफल होकर बच्चे कितने आनन्द का अनुभव करते हैं। बच्चा अपने माँ-बाप या अपने अभिभावकों से कोई बात मनवाना चाहता है और उसके प्रयास के फलस्वरूप हम उसकी बात मान लेते हैं; अपने प्रयासों के सफल होने पर वह कितना खुश होता है, कभी अनुभूति करके तो देखिए। वास्तविक बात यही है कि प्रत्येक व्यक्ति सफलता ही चाहता है। हेनरी डेविड का कथन भी यही इंगित करता है, 'हम सफल होने के लिए पैदा हुए हैं, फेल होने के लिए नहीं।' निःसन्देह हम सफल होने के लिए ही पैदा हुए हैं, किंतु सफल हमारे प्रयास होते हैं; हम नहीं।

वास्तव में हमारा व्यक्तित्व ही हमारे कर्मों से पहचाना जाता है। सफलता केवल अन्तर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में स्थान पाकर ही नहीं मिलती। माँ-बाप जब अपनी नन्ही-मुन्नी बच्ची को लड़खड़ाते हुए एक कदम चलाने में सफल हो जाते हैं तो वह पहला कदम उन्हें कितना आनन्द देता है, उसकी अनुभूति शब्दों में बयां करना मेरे विचार में तो संभव नहीं है। मुझे आज भी याद है, जब मेरी पहली रचना एक स्थानीय साप्ताहिक में छपी थी, तो सफलता की कितनी अनुभूति हुई थी। उसकी बराबरी शायद नोबल पुरस्कार से सम्मानित होने वाली अनुभूति भी न कर पाये। कम से कम मुझे तो यही लगता है। सफलता की अनुभूति करने के लिए आवश्यक है कि हम सफलता के अर्थ को जानें और स्वीकार करें कि हमने उपलब्धि प्राप्त की है और यह उपलब्धि हमारे प्रयासों की सफलता है।

सफलता शब्द का निमार्ण 'स' उपसर्ग और 'ता' प्रत्यय के 'फल' के साथ योग से हुआ है, जिसका अर्थ होता है- 'फल सहित' अर्थात् किए गये प्रयासों का फल या परिणाम प्राप्त होना। अपने प्रयासों का परिणाम प्राप्त करना अर्थात् किए गये प्रयासों का परिणाम के रूप में फलीभूत होना। अभिधा शब्द-शक्ति के अनुसार सफल का अर्थ फल लगने से होता है किन्तु इसका अधिकांशतः लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। सफलता का लाक्षणिक अर्थ किसी कर्म का तदनुकूल परिणाम प्राप्त होने से है।

इस प्रकार सफलता कर्म के पश्चात् आती है। सफलता से पूर्व कर्म की उपस्थिति आवश्यक है। यदि किसी व्यक्ति को बिना कर्म किए कोई वस्तु अनायास प्राप्त हो जाती है तो उसे सफलता नहीं कहा जा सकता। वह व्यक्ति सफलता के आनन्द का अधिकारी भी नहीं है। यदि वह व्यक्ति अनायास प्राप्त होने वाली वस्तु को प्राप्त करने का जश्न मनाता है, तो वह मुफ्तखोर है। मुफ्तखोरी न तो व्यक्ति के विकास के लिए उपयोगी है और न समाज और राष्ट्र के विकास के लिए। मुफ्तखोरी हमारे चरित्र का नकारात्मक पहलू है। जब कर्म ही नहीं किया गया तो सफलता किस बात की। पेड़ पर ही फल लगेगा, तभी वह सफल होगा। बिना बीज डाले, सिंचाई किए, पुष्पित-पल्लवित हुए फल प्राप्त नहीं हो सकता। प्राप्त होना भी नहीं चाहिए; यह प्रकृति के सिद्धांतों के प्रतिकूल है और प्रकृति के सिद्धांतों के खिलाफ क्रियाएँ होना विनाश का पूर्वाभास ही कहा जा सकता है। कहने का आशय है- अनायास कुछ प्राप्त हो जाना सफलता नहीं है। सफलता का आशय हमारे द्वारा किए गये कर्मो के परिणाम प्राप्त होने से है।

आनुपातिक रूप से कर्मों का फल तो प्राप्त होना ही है। अतः सफलता सुनिश्चित है, इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं। महात्मा गांधी के अनुसार कुछ युद्ध ऐसे होते हैं, जिनमें हारना भी विजय ही होती है। वास्तव में जय हो या पराजय हमारे कर्म का ही परिणाम है और परिणाम प्राप्त होना ही तो फल प्राप्त होना है; और फल प्राप्त होना ही सफलता है।

कर्म का परिणाम ही सफलता :

कर्म जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है, उस उद्देश्य की प्राप्ति ही सफलता का द्योतक होता है। कर्म निरुद्देश्य नहीं हो सकता। मानव के समस्त कर्म ध्येय

आधारित होते हैं। इसे हम यूँ भी कह सकते हैं कि मानव एक विवेकवान प्राणी है। अतः उसके समस्त कर्म ध्येय आधारित होने चाहिएँ। मानव का ध्येय ही स्पष्ट नहीं होगा तो वह कर्म करेगा किसके लिए! जब गंतव्य ही निर्धारित नहीं होगा तो हम यात्रा का प्रारंभ ही क्यों करेंगे और किस दिशा की ओर?

निःसन्देह हम यात्रा प्रारंभ करने से पूर्व गंतव्य का निर्धारण करते हैं, किंतु गंतव्य तक पहुँचने के लिए हमें यात्रा करना अनिवार्य है। बिना यात्रा किए कोई पथिक अपने गंतव्य पर नहीं पहुँच सकता। ठीक उसी प्रकार किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कर्म करना तो अनिवार्य है। कर्म करने से ही तो फल की प्राप्ति होगी। ध्येय, उद्देश्य और लक्ष्य ही हैं जो हमें आगे बढ़ने व निरंतर कर्मरत रहने की अभिप्रेरणा देते हैं, किंतु अभिप्रेरणा को कार्यरूप में तो कर्म के द्वारा ही बदला जा सकता है। ध्येय, उद्देश्य या लक्ष्य के बिना मानव दीर्घकाल तक कर्मरत नहीं रह सकता और कर्म के बिना जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। कर्म के बिना महान से महान लक्ष्य व अच्छी से अच्छी योजना दिवा स्वप्न से अधिक कुछ भी नहीं है। वास्तव में कर्मशीलता ही तो जीवन है।

कर्म ही हमें सफलता की राह दिखाता है, तभी तो थियोडार रुजवेल्ट ने अपनी आत्मकथा में लिखा है–"श्रेय उस व्यक्ति को मिलता है, जो वस्तुतः संघर्ष क्षेत्र में कूद पड़ता है; जिसका चेहरा धूल, पसीने तथा रक्त से धूसरित हो जाता है। जो बहादुरी से लड़ता है, जो बार–बार गलतियाँ करता है और बार–बार चूकता है। जो उत्साह का आनंद लेता है और एक उचित ध्येय के लिए प्रयासों में जुटा रहता है। जो इस बात को जानता है कि यदि ठीक रहा तो उसे उपलब्धि का हर्ष होगा और असफल रह गया तो उसकी हार इस बात का प्रमाण होगी कि उसने हाथ पर हाथ रखकर बैठने से जूझना मुनासिब समझा। उसका चेहरा उन भीरु और अकर्मण्य व्यक्तियों जैसा भी नहीं होगा, जो न हार जानते हैं और न जीत।"

वास्तव में पूर्ण निष्ठा व समर्पण से किया गया कर्म अपने आप में सफलता होती है। प्रत्येक पराजय हमें सीख देती है। इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध लेखक प्रो॰ पी॰ के॰ आर्य ने लिखा है कि पराजय हमारी असफलता का कारण नहीं है, बल्कि पराजय में जो सीख, शिक्षा और अनुभव छिपा है, उसे न पहचान पाना ही हमें असफल बनाता है। प्रत्येक असफलता जो सीख, शिक्षा और अनुभव देती है, वह भी तो सफलता ही है, जिसे स्वीकार करने के लिए हमें तत्पर रहना चाहिए। जिस कर्म से हमें शिक्षा मिलती है, उस कर्म को हम असफल कैसे कह सकते हैं?

बिना कर्म के सफलता की कल्पना करना ही बेमानी है। सफलता तो तब है, जब हमने कोई लक्ष्य निर्धारित किया हो, परिस्थितियों का अध्ययन किया हो, पूर्वानुमान लगाया हो, उसके लिए योजना बनाई हो, उसके लिए संसाधन जुटाये हों, उन संसाधनों का तकनीकी के साथ कुशलतापूर्वक प्रयोग किया हो। इस प्रकार मानवीय व भौतिक संसाधनों का प्रबंधन करने के साथ किए गये प्रयासों के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाला संतुष्टिदायक परिणाम ही उस कार्य का फल है। कार्य का फल प्राप्त होना ही तो सफलता है। सफलता का आधार कर्म है, तभी तो कर्म के महत्व को इस प्रकार स्पष्ट किया गया–

कर्म जिनके अच्छे हैं, किस्मत उनकी दासी है।
नीयत जिनकी अच्छी है, घर ही मथुरा काशी है।।

ई–मेलः santoshgaurrashtrapremi@gmail.com

गीत

अपनी धरती भूले

❑डॉ॰ महश्वेता चतुर्वेदी डी॰ लिट्

शिखरों को छूने वाले हैं फिर भी शिखरों के पास नहीं।
इच्छायें अन्य ग्रहों की हैं
पर अपनी धरती भूल रहे
पाने के श्रम में सब खोया
भ्रम के झूले हैं झूल रहे।
अन्धी भौतिकता के घर में, मानवता का है वास नहीं।
शापों के संचय में तत्पर,
वरदानों का है ध्यान नहीं।
नभ राकेटों की दुनिया में
अमृत की मिली दुकान नहीं।
हिंसा का नर्तन पग–पग पर है, कहीं नेह का लास नही।
ऊँची बातों का कर्मों से
परिणय न अभी तक हो पाया।
बस सर्वधर्म समभाव में भी
चर्चा तक है नर खो पाया।
ज्योतिर्मय करने वाले हैं, उन दीपों पर विश्वास नहीं।
दानवता की हुंकारों से
दुर्बल मन हैं डरने वाला।
यदि बन जाये प्रलयंकर तो
मेधा रिपु की हरने वाला।
उन्नति का है जो मूल मन्त्र, करता उसका सुविकास नहीं।

–२४, आँचल कालोनी, श्यामगंज, बरेली

इतिहास के पन्नों से

सिकंदर (Alexendar) की जीत का सच!

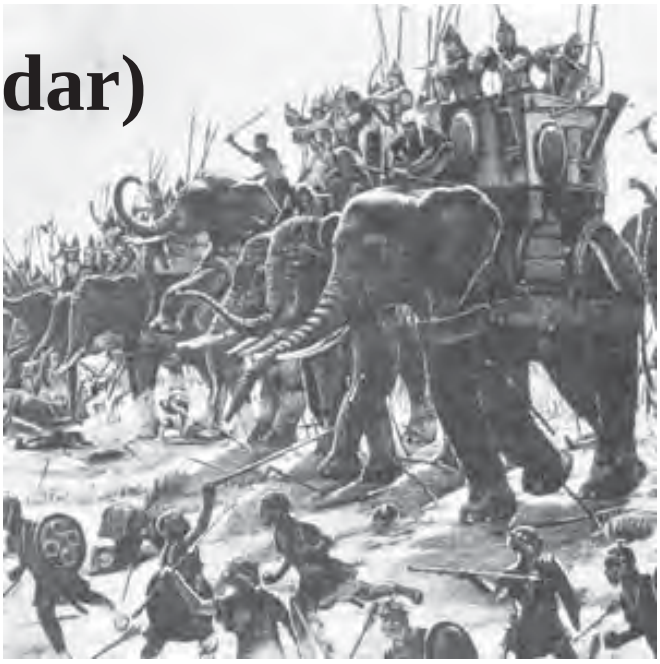

❑भवितव्य आर्य

''जेहलम के युद्ध में सिकन्दर की अश्व सेना का अधिकांश मारा गया था। सिकन्दर ने अनुभव कर लिया था कि यदि मैं लड़ाई जारी रखूँगा तो पूर्ण रूप से अपना विनाश कर लूँगा। अत: उसने युद्ध बंद करने के लिए पोरस से प्रार्थना की। भारतीय परम्परा के अनुरूप ही पोरस ने शरणागत शत्रु का वध नहीं किया''

ईथोपियाई महाकाव्यों का सम्पादन करने वाले

श्री ई. ए. डब्ल्यू. बैज

आज तक भारतीयों को इतिहास में पढ़ाया गया है और आज भी पढ़ाया जा रहा है कि ग्रीक हमलावर सिकंदर या अलक्षेन्द्र ने भारतीय सीमान्त राजा पुरु या पोरस को हरा दिया और उससे पूछा कि बोलो तुम्हारे साथ क्या सलूक किया जाये? तो पोरस ने जवाब दिया कि 'वही जो एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है!'

कमाल की बात है, मैसेडोनिया का यह अत्यंत महत्वाकांक्षी शासक जिसने अपने पिता फिलिप्स द्वितीय तक को, जिसने अपनी पांचवीं रानी ओलम्पिया के पुत्र के लिए समूचे विश्व का सपना देखा था, भरी सभा में (पौसैनियस द्वारा) मरवा डाला था। उस पिता को जिसने आठ रानियों के कई पुत्रों में मात्र अलक्षेन्द्र के लिए महास्वप्न देखा...। सिकन्दर, जिसने 16 वर्ष की उम्र में ही युवराज बन, थेबस में क्रूरतापूर्वक खून की नदियाँ बहा दीं। ग्रीस की प्राचीन महान सभ्यता और यूनानी नस्ल का विध्वंस करने में जिसके माथे पर शिकन तक न आई। जिसने परसिया या पारशीय राष्ट्र या फारस को वीभत्स रूप में विध्वंस किया। जिसने एशिया माइनर और मिश्र में अपने झंडे गाड़े और जो तात्कालिक विश्व के महानतम व सर्वाधिक ऐश्वर्यवान साम्राज्यों के समूह भारतवर्ष को पूरी लालसा से लीलने के लिए ही सिंधु की तरफ चला था। उसने बैक्ट्रिया की ईंट से ईंट बजा दी। बस सामने सिन्धुस्थान या भारतवर्ष ही था।

फिर ऐसा क्या हुआ- सिकंदर, जिसने पारसियों की दस लाख की पैदल सेना को कुछ हजार सैनिक खोकर और यूनानियों की 20,000 की सेना को 120 सैनिक खोकर ही प्राप्त कर लिया था- अपनी यूनानियों, मिस्रियों, बाल्कन (वाह्लीक), इलियरिन लडाकों से भरी विशाल सेना से लैस यह अति महत्त्वाकांक्षी आक्रांता- कैसे सिंधु नदी पार कर भारतवर्ष की भूमि पर उतरते ही अचानक बदल गया? ऐसी सेना जिसने मैसेडोन यानि आज का इटली से लेकर सिंधु नदी या आज के पाकिस्तान तक अपनी सल्तनत बिछायी तो फिर अचानक ही कैसे भारत के एक छोटे से राजा पर मेहरबान हो, दयालुता से अभिभूत हो अपने देश वापस चला गया? जिसने 16 साल की उम्र से मानवी सिरों को धड़ से अलग करने का ही काम किया, अचानक कैसे 26 वर्ष की उम्र में साधु बन अपने देश को चला गया? वो सिकंदर जिसकी घुड़सवार सेना विश्व की सबसे खूंख्वार सेना थी, जिसने भारतवर्ष के सीमावर्ती प्रदेशों में अभिसार को तटस्थ बना, अम्भी को राज्य का लालच दे, भारतीय शूरवीर राजा पुरु को हराकर भारतभूमि पर कब्जा करने का सपना संजोया था, ऐसा ह्रदय परिवर्तन कैसे हुआ उसका? क्या गंगा किनारे शीर्षासन मुद्रास्थ हिन्दू साधु की संसार की मोहमाया त्यागने की घटना ने उसको बदल दिया? आखिर क्यों राजा पुरु को हराने के बाद उस महान सिकंदर का मन

पुरु की बात 'मेरे साथ वह व्यवहार करो जो एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है।' मानने को कर गया?

हमारी हर इतिहास की पुस्तक इसी प्रकार की कहानियाँ हमें सिखाती रहती है। हम भी सिकंदर को 'सिकंदर महान' कहते हैं..क्यों? 1300 वर्षों के मुगलई और अंग्रेजी शासन ने हमारी बुद्धि भी कुंद कर दी। यूनान या यवनदेश, जिससे उत्पन्न हुआ आज का पश्चिमी समाज और खासकर अंग्रेजों का खड़ा किया गया झूठा वैश्विक साम्राज्य अपने को मानता है, वास्तव में मेडिटेरेनियन या 'मध्य-धरातल' सागर के किनारे बसा यह छोटा सा जनसमुदाय भारतवर्ष से बाह्य सीमा पर स्थित म्लेच्छ राज्यों (भारतीय प्राचीन साहित्य में) में आता था। वास्तव में इन स्थानों और आसपास के स्थानों को भारतीय आसुरी राज्य कहते थे। अलक्षेंद्र, मैसेडोन के सक्षम शासक का अत्यंत महत्त्वाकांक्षी पुत्र था। वह निस्संदेह कुशल लड़ाका था। उसे पहले से ही एक बड़ा साम्राज्य विरासत में मिला था। वह साम्राज्य, जो उसके स्वयं के लिए तो कल्पनातीत था पर उन्हें अधिकांश तात्कालिक विश्व पर स्थित हिन्दू साम्राज्य की कोई जानकारी नहीं थी। यवन भौगोलिक इतिहासकार टॉलमी और उसी की तरह के अन्य, भारत के महान राज्यों के बारे में बस सुनते ही रहते थे, जैसे 'पॉलीबोथरा' की कल्पना गंगा किनारे स्थित महान भारतीय साम्राज्य के शक्ति केंद्र पाटलिपुत्र के रूप में करना! उसी गलती को मेगस्थनीज एवं फिर से अट्ठारहवीं शतब्दी में विलियम जोन्स इत्यादि ने दुहराया और जिसे सारे अंग्रेज, जिन्होंने एक तथाकथित महान साम्राज्य बनाया, आज तक गा रहे हैं! भारत से इतर म्लेच्छों के लिए वह साम्राज्य काफी बड़ा हो सकता था पर, भारत के लिए तो वह मामूली ही कहा जायेगा!

पर, सन 327 ईसापूर्व में क्या हुआ था? सिकंदर के बारे में विश्व के कई लोग जानते थे और जानते हैं, पर हम आज तक नहीं जानते। उसका हश्र क्या हुआ? सिकंदर की सेना अपनी अश्व सेना के लिए प्रसिद्ध थी और यही सेना और अपनी धूर्तता लेकर भारत को खा जाने के लिए आया था-- उसने सीमावर्ती राज्यों को अपनी तरफ भी मिला लिया और जो नहीं मिला उसको रास्ते से हटाने के लिए अपने क्रूर सेनापतियों, जिनमें मेसेडोनियन लड़ाकों के साथ उसके वाह्लीक, मिश्री और पर्शियन सहयोगी भी थे, युद्ध करने को उद्यत हुआ।

भारत की सीमा में पहुँचते ही पहाड़ी सीमाओं पर भारत के अपेक्षाकृत छोटे राज्यों अश्वायन एवं अश्वकायन की वीर सेनाओं ने कुनात, स्वात, बुनेर (आज का पेशावर) में सिकंदर की सेनाओं को भयानक टक्कर दी। मस्सागा 'मत्स्यराज' राज्य में तो महिलाएं तक उसके सामने खड़ी हो गयीं पर धूर्त यवन ने मत्स्यराज को हत करने के बाद संधि का नाटक करके रात में हमला करके उस राज्य की राजमाता सहित निर्दोष नागरिकों को तलवार से काट डाला। यही काम उसने दूसरे समीपी राज्य ओरा में भी किया, इसी लड़ाई में सिकंदर की एड़ी में तीर लगा, जिसको आधार बनाकर सिकंदर के बड़बोले प्रशस्तिकारों ने अकाइलिस की कथा बनाई!

अब इसके आगे पौरव राज्य था जिसके राजा महाभारत कालीन पुरु वंश के राजा पुरु थे, जिसे यवन पोरस बोलते थे। सिंधु तट पर उनके विनाश का स्वप्न लिये यवन सेना 10-12 प्रमुख सेनापतियों के साथ बस तैयार ही थी। अपने जासूसों और धूर्तता के बल पर सिकंदर के सरदार युद्ध जीतने के प्रति पूर्णत: विश्वस्त थे, पर युद्ध शुरू होते ही उसी दिन यह विदित हो गया की पौरव कौन हैं और क्या हैं? राजा पुरु के शत्रु लालची अम्भी की सेना लेकर सिकंदर करीब 37000 की सेना, जिसमें 7000 घुड़सवार थे, राजा पुरु की 20000 की सेना, जिसमें 2000 घुड़सवार थे, और बहुत से नागरिक योद्धा थे के खिलाफ निर्णायक युद्ध के लिए तैयार था। जीत के प्रति वह आश्वस्त था। सिकंदर की सेना में कई युद्धों के घुटे योद्धा थे जिनमे उसके विजित प्रदेशों के सैनिक भी थे, जिन्हें विजित राज्यों में विद्रोह रोकने के लिए भी सुदूर तक ले जाया गया था। भारतीय सीमावर्ती राज्यों से संघर्ष में ही सिकंदर के (सेनापतियों) को अनुमान हो गया था कि आगे क्या हो सकता है, पर सनकी सिकंदर अपने ही घमंड में इस भारतीय राज्य को नेस्तनाबूद करने को उद्यत था। अपनी सनक में वह बहुत कुछ नहीं देख पाया, जानता तो वह और भी कम था। राजा पुरु के पास करीब 200 की गजसेना थी। यहाँ जानने वाली बात है कि हाथी मात्र अफ्रीका एवं भारत में ही पाये जाते हैं। यवनों ने हाथी सेना क्या, हाथी तक कभी नहीं देखे थे। यवन कुशल घुड़सवारी के महारथी थे और अधिकतर युद्ध उन्होंने इसी सेना और अपने युद्धक हथियारों जैसे कैटापल्ट इत्यादि के बल पर ही जीते थे। वर्षों तक यवन स्वयं को ही समूचे विश्व के स्वामी समझते रहे थे, और यही सब उन्होंने अपने इतिहास में भी रचा। पहले से ही क्षतिप्राप्त यवनी सेना

ने अगले दिन जो झेला उसने उनके दिमाग ठीक कर दिए। राजा पुरु जिसको स्वयं यवन सात फुट से ऊपर का बताते हैं, अपनी शक्तिशाली गजसेना के साथ यवन सेना पर टूट पड़े! इसके पहले झेलम नदी पर दोनों सेनाओं के बीच कई दिनों तक सतर्क आशंकित निगाहों का आदान प्रदान होता रहा। भारतीयों के पास विदेशी को मार भगाने की हर नागरिक की हठ, शक्तिशाली गजसेना के अलावा कुछ अनदेखे हथियार भी थे। जैसे सातफुटा भाला- जिससे एक ही सैनिक कई कई शत्रु सैनिकों और घोड़े सहित घुड़सवार सैनिकों भी मार गिरा सकता था। इस युद्ध में पहले दिन ही सिकंदर की सेना को जमकर टक्कर मिली। यवन सेना के कई वीर सैनिक हताहत हुए। यवन सरदारों के भयाक्रांत होने के बावजूद सिकंदर अपने हठ पर अड़ा रहा और अपनी विशिष्ट अंगरक्षक एवं अन्त: प्रतिरक्षा टुकड़ी को लेकर बीच युद्ध क्षेत्र में घुस गया। भारतीय सेनापति हाथियों पर होने के कारण उन तक कोई खतरा नहीं हो सकता था, राजा की तो बात बहुत दूर है। राजा पुरु के भाई अमर ने सिकंदर के घोड़े बुकिफाइलस (संस्कृत-भवकपाली) को अपने भाले से मार डाला और सिकंदर को जमीन पर गिरा दिया। ऐसा मैसेदैनियन सेना ने अपने सारे युद्धकाल में कभी होते हुए नहीं देखा था। कोई आज तक सिकंदर, सिकंदर के अश्व क्या, उसकी विशिष्ट अन्त: टुकड़ी तक को खरोंच नहीं दे पाया था। सिकंदर जमीन पर गिरा तो सामने राजा पुरु तलवार लिए खड़ा था। मैसेडोनिआ का महान विश्वविजेता बस पल भर का मेहमान था कि तभी राजा पुरु ठिठक गये। यह डर नहीं था, शायद यह आर्य राजा का क्षात्र धर्म था। बहरहाल तभी सिकंदर के अंगरक्षक उसे तेजी से वहाँ से भगा ले गए।

भारत में शत्रुओं के उत्तरपश्चिम से घुसने के दो ही रास्ते रहे हैं जिनमें सिंधु का रास्ता कम खतरनाक माना जाता था। सिकंदर सनक में आगे तक घुस गया जहाँ उसकी पलटन को भारी क्षति उठानी पड़ी। पहले ही भारी क्षति उठाकर यवन सेनापति अब समझ गए थे कि अगर युद्ध और चला तो सारे यवन यहीं नष्ट कर दिए जायेंगे। सिकंदर को जब यह बात समझ आ गई तो वह वापस भागा। पर उस रास्ते से नहीं भाग पाया जहाँ से आया था। उसे दूसरे खतरनाक रास्ते से गुजरना पड़ा जिस क्षेत्र में प्राचीन क्षात्र या जाट निवास करते थे। उस क्षेत्र को जिसका पूर्वी हिस्सा आज के हरयाणा में स्थित था। महान इतिहासकार श्री पी.एन. ओक ने 'मलावी' नामक एक भारतीय जनजाति का उल्लेख किया है। उन्होंने प्लूटार्च के संदर्भ से लिखा है कि इस जनजाति से हुए संघर्ष में सिकन्दर के प्राण मुश्किल से बचे थे। उसके अंगरक्षकों ने अपने प्राण देकर उसकी जान बचाई। म्यूजिकन, ओक्सीकन व साम्बुस आदि भारतीय लोगों ने उसकी सेना को अपार क्षति पहुंचाई। भारत में उसका संघर्ष उसकी मौत का परवाना बन गया। वह अपनी नाममात्र बची खुची सेना के साथ मीडिया में शिविर डाले पड़ा था। उसकी सेना में विद्रोह फैल रहा था। अपने मित्र के एक भोज में उसने भारत विजय करने में गर्वीला मस्तक झुक जाने की कटु स्मृतियों को भुलाने के लिए अत्यधिक मात्रा में शराब पी ली। इससे उसे ज्वर हो गया। 28 जून 323 ई. पू. में वह बेहोशी की हालत में ही मर गया। सिकंदर के दरबारियों एवं रक्षकों ने इस अपमान से बचने के लिए वह कथा बनाई जो सिकंदर की महिमामंडित छवि से मेल खा सके। पर हर विदेशी ने पूरा गप्प नहीं लिखा प्लूटार्क ने लिखा -सिकंदर राजा पुरु की 20,000 की सेना के सामने तो ठहर नहीं पाया आगे विश्व की महानतम राजधानी की विशालतम सम्राट धनानंद की 3 50 000 की सेना उसका स्वागत करने के लिए तैयार थी, जिसमें 80,000 घुड़सवार, 8000 युद्धक रथ एवं 70000 विध्वंसक हाथी सेना थी। उसके सैनिक मुर्गी-तीतर की तरह काट दिए जाते। उस महान सिकंदर की महान सेना में कितने वापस लौटे यह तो बस सोचने वाली ही बात है। पर, आज हम वह क्यों मानते हैं जो सभी यवनी-ग्रीक अपनी स्वमुग्धता में मानते हैं? ग्रीकों की शिक्षा यूरोपियनों ने ली और अंग्रेजों ने ग्रीक-रोमनों की सभ्यता से प्रेरणा ली। वही इतिहास अपने निवासियों को पढ़ाया वही इतिहास अंग्रेजों के साथ भारत में आ गया। अंग्रेजी गुलामी के साथ हम आज भी सिकंदर को महान और प्राचीन भारतीय वीरों में से एक राजा पुरु को पराजित एवं लज्जित मानते हैं। उससे भी अधिक शोचनीय है कि हम आज भी अपने नायकों को नहीं जानते, क्योंकि गुलामी हमारी मानसिकता में रच-बस गयी है, हमारी पहचान मुगलों और अंग्रेजों की गुलामी से अधिक नहीं है। आज भी कई, या शायद सभी भारत को विदेशी इतिहास से समझ रहे है। कदाचित्, हम अभी जिन्दा नहीं हुए हैं।

'भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें' (पुरुषोत्तम नागेश ओक) के आधार पर। फेसबुक से साभार

हम चयनीय महानताओं से युक्त हों!

देवराज आर्य सेवानिवृत्त मु० अ०
आर्य टैन्ट हाऊस, रोहतक मार्ग, जीन्द-१२६१०२

जिस व्यक्ति में उक्त गुण आ जाते हैं, परमात्मा उसको उत्तम रसीली मीठी वाणी, शोकनिवारण शक्ति तथा शुभ श्रेष्ठ वैदिक कर्म करने की क्षमता प्रदान करता है।

वसुं न चित्रमहसं गृणीषे वामं शेवमतिथिमद्विषेण्यम्।
स रासते शुरुधो विश्वधायसोऽग्निर्होता गृहपतिः सुवीर्यम्।।
ऋ० १०/१२२/१

वेद-मन्त्र महान बनने के लिए चयनीय महानताओं को जीवन में धारण करने की प्रेरणा कर रहा है। हम किसकी प्रशंसा करते हैं? जिस व्यक्ति का जीवन उत्तम ज्ञान, गुण, कर्म से युक्त हो। मन्त्र में आई बातों को ध्यान से पढ़ें और चिन्तन करें। चिन्तन करने के बाद (निदिध्यासन) अभ्यास अर्थात् व्यवहार में लाने का यत्न करें। महान बनने के लिए प्रत्येक इन्द्रिय की महानता अर्थात् विशेषता को चुन-चुनकर अपने जीवन में धारण करें।

भावार्थः- (अहं गृणीषे) मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ जिस व्यक्ति में इस मन्त्र में लिखे विशेष गुण हों। कैसे गुण हों उसमें?

(चित्र महसं) (वसुं न) जैसे शरीर में प्राण प्रशंसनीय हैं। सभी इन्द्रियों की महानता प्राणों के साथ है। यदि हमारी समस्त इन्द्रियाँ स्वस्थ और पवित्र हैं, परन्तु शरीर से प्राण निकल जायें तो इन्द्रियाँ सुन्दर होते हुए भी कोई काम नहीं कर सकतीं, उनकी कोई गरिमा शरीर में नहीं रहती।

शरीर में प्राण निष्काम सेवा का काम करते करते हैं। प्राणों की अपनी कोई कामना नहीं है। सोते समय सभी इन्द्रियाँ अपना कार्य व्यवहार बन्द कर देती हैं, परन्तु प्राणों का कार्य सुचारू रूप से चलता रहता है। इन्द्रियों की शक्ति और सुन्दरता प्राणों के ही साथ है। जिस प्रकार प्राणों के चलने से ही सभी प्राणियों की विशेष महत्ता है, उसी प्रकार प्राणों के ही समान उस व्यक्ति की संसार प्रशंसा करता करता है जिसके अन्दर विशेष चयनीय गुण हों। महर्षि दयानन्द एक स्थान पर लिखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति विद्वान् नहीं बन सकता, परन्तु धर्मात्मा गुणवान् प्रत्येक व्यक्ति बन सकता है। यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक विद्वान् गुणवान् भी हो। विद्वान् गुणहीन, छली, कपटी, ईर्ष्यालु एवं कामी भी हो सकते हैं। उनमें कोई मानवीय उत्तम कोटि के गुण न भी हों। कोई व्यक्ति किसी भाषा के पढ़ने या बोलने मात्र से विद्वान् नहीं बन जाता, वह तो भाषा विज्ञ होता है। विद्वान् तो वह होता है जिसने वैदिक ज्ञान को अपने व्यावहारिक जीवन में उतार लिया हो। विद्वान् को सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन में एक ही सत्य पर निर्भर रहना चाहिए। यदि उसके जीवन में प्रवंचना है तो वह विद्वान् नहीं। विद्वान् के जीवन में एकरूपता की विशेष महत्ता है। 'विद्वांसों हि देवाः'' विद्वानों को ही देव कहते हैं। उनके जीवन का ही अनुकरण साधारण लोग करते हैं। इसके साथ गुणवान्, चाहे विद्वान् न भी हो; वह गुणों के द्वारा प्रशंसनीय बन जाता है। यदि कोई व्यक्ति विद्वान होने के साथ साथ गुणवान् और आचारवान् भी है तो समाज में वह विशेष प्रशंसनीय, माननीय होता है।

इसी प्रकार प्रत्येक इन्द्रिय की अपनी एक विशेष महानता होती है। उसे हम जीवन में धारण करें। ब्रह्मयज्ञ अर्थात् सन्ध्या उपासना करते समय जब हम मार्जन मंत्र बोलते हैं तो ईश्वर से शरीर के अंगों की स्वस्थता एवं निर्दोषता की प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि 'ओं भूः पुनातु शिरसि' परमात्मा मेरे सिर में स्थित बुद्धि को पवित्र करे, जिससे मैं पवित्र

चिंतन कर सकूँ। मस्तिष्क की महानता पवित्र विचारों से है। मान लिजिए एक व्यक्ति कई सारी भाषाएँ जानता है। पी०एच०डी भी है तथा चतुर भी दिखाई देता है, पर आचार व्यवहार उसका यदि पवित्र नहीं है तो उसके मस्तिष्क की कोई महानता नहीं है।

आगे जल द्वारा मार्जन करते हुए हम कहते हैं ''ओ भुवः पुनातु नेत्रयोः'' सबके दुःखों को दूर करने वाला ईश्वर मेरे दोनों नेत्रों में पवित्रता करे अर्थात् मेरी दृष्टि को पवित्र रखे। हम अपने नेत्रों से संसार के सभी पदार्थों को देखते हैं, देख कर चलते और काम करते हैं, परन्तु दृष्टि की महानता क्या है? दृष्टि की महानता है–निर्विकार दृष्टि होना। पांचों ज्ञानेन्द्रियों में नेत्र की महानता विशेष है। इनमें यह प्रमुख इन्द्रिय है। परन्तु दृष्टि में यदि यह पवित्रता नहीं है तो मनुष्य आंखें होते हुए भी अन्धा तथा बुद्धिमान होते हुए भी बुद्धिहीन एवं निर्बल है।

नेत्रों का सौन्दर्य क्या है? जो नेत्र किसी के सौन्दर्य और वैभव विशेष को देखकर विकार को प्राप्त नहीं होते, वे सुन्दर हैं, स्वस्थ एवं निर्विकार हैं। वर्तमान में सबसे बड़ा विकार यही है कि हमारी दृष्टि पवित्र नहीं रही, जिसके कारण समाज और राष्ट्र में भय, तनाव और वैमनस्य बढ़ता जा रहा है। इसी दोष के कारण हमारी माताएँ, बहिनें और बेटियाँ आज असुरक्षित हैं।

इसी प्रकार ''ओं स्वः पुनातु कण्ठे'' आनन्द स्वरूप और सबको आनन्द देने वाला परमात्मा मेरे कण्ठ में पवित्रता करे अर्थात् मैं सत्य और पवित्र भाषण किया करूँ। यदि हम सन्ध्या करते रहें और बोलने में मधुरता, कोमलता तथा सत्य न हो तो 'पुनातु कण्ठे' बोलने का क्या लाभ है? वाणी की सत्य वक्तृता एवं मधुरता ही वाणी की विशेषता है।

हृदय की विशेषता क्या है?ओं महः पुनातु हृदये– ईश्वर सबसे महान् होने के कारण 'महः' कहलाता है। उसी महान् परमात्मा से आत्मा के महान बनाने और हदय की विशालता, पवित्रता तथा उदार होने की याचना करते हैं। हृदय की सबसे बड़ी महानता यह है कि श्रद्धा और प्रेम के द्वारा दूसरों की सेवा करने के लिए उनकी सहायतार्थ अपने हदय में विशालता हो ।

याद रखो– हृदयहीन व्यक्ति संसार में किसी काम का नहीं होता। जिसके हदय में सेवा का भाव नहीं, श्रद्धा और सत्य नहीं, वह किसी काम का है? यदि हृदय विशाल, पवित्र एवं श्रद्धा से पूर्ण है तो सारा संसार अपना है अन्यथा माता–पिता, भाई–बन्धु भी बेगाने दिखाई देने लगते हैं। यह है हृदय की लघुता। ऐसा कब होता है? जब मनुष्य का स्वार्थ सीमा को लांघ जाता है तो हृदय की उदारता समाप्त हो जाती है। उसके भाव संकीर्ण एवं दोषपूर्ण हो जाते हैं जो स्वयं उसके लिए, परिवार एवं समाज के लिए हानिकारक होते हैं। जरा इतिहास को देखें जब दुर्योधन के मन में स्वार्थ एवं हृदय में संकीर्णता के भाव पैदा हुए तो श्रीकृष्ण महाराज के समझाने पर भी सूई की नोक के बराबर धरती देने के लिए भी तैयार नहीं हुआ। अर्थात् उसके हृदय में अपने भाईयों के लिए कोई स्थान नहीं रहा। जिसके परिणामस्वरूप महाभारत का युद्ध हुआ। जनधन की भारी हानि हुई, वैदिक संस्कृति समाप्त प्रायः हो गई।

इसलिये मूर्खों और स्वार्थी व्यक्तियों के प्रभाव में आकर संकीर्ण–हृदय मत बनो। श्रद्धाहीन होकर अपने पवित्र हृदय को अपवित्र मत करो।

अन्यथा– न तुम ही रहोगे न साथी तुम्हारे।
जो डूबेगी नैया तो डूबोगे सारे।।

इसी प्रकार कानों की महानता कर्त्तव्य की पुकार सुनकर उसे पूरा करने में है। कर्त्तव्य की पुकार सुनी युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने तथा उसे पूर्ण रूप से निभाने के लिए अपना पूरा जीवन वेद प्रचार, समाज सुधार, राष्ट्र उद्धार, दलित उद्धार एवं स्त्री शिक्षा आदि उपकार के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया। गुरु विरजानन्द के सामने की प्रतिज्ञा को उन्होंने पूर्णतया निभाया।

मरनव जीवन की महानता वेद मन्त्रों के अर्थानुसार अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने में है, तभी ब्रह्म की प्राप्ति होगी। 'ओं तपः पुनातु पादयोः' अर्थात् तपस्वरूप, दोषों का विनाशक परमात्मा मेरे दोनों पैरों में पवित्रता करे। मेरा चाल चलन (आचरण) पवित्र करे। इससे आगे कहा–'ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि'– अर्थात् सत्यस्वरूप प्रभो मेरी बुद्धि को विशेष रूप से सदैव पवित्र रखे। बुद्धि की पवित्रता से ही सभी इन्द्रियों की पवित्रता बनी रहती है।

अन्त में आया (वामं शेवं–अतिथिम्–अद्विषेण्यं) जो व्यक्ति इन मानवीय गुणों से युक्त है वह प्रसंशनीय है। जो सेवा के द्वारा संसार को सुखी करता है, (अतिथिम्) अतिथि की तरह रहता है, संसार में अधिक आसक्ति नहीं रखता। जो किसी से द्वेष भाव नहीं रखता; आज भाई–भाई में द्वेष की अग्नि जल रही है। इस द्वेष के कारण ही परिवार, समाज और राष्ट्र टूट रहे हैं। वेदमाता कह रही हैं द्वेष भाव छोड़कर प्रेम का अमृत बहाने वाला मुझे प्रिय है।

जिस व्यक्ति में उक्त गुण आ जाते हैं, परमात्मा उसको उत्तम रसीली मीठी वाणी, शोकनिवारण शक्ति तथा शुभ श्रेष्ठ वैदिक धर्म करने की क्षमता प्रदान करता है। इसलिए प्रत्येक इन्द्रिय की महानता को जीवन में धारण करो जिससे जीवन प्रसंशनीय बन जाए।

कहानी

और बादल छंट गये!

❑**रामफल सिंह आर्य**, म० नं० 87/एस-3, बी.एस.एल
कालोनी सुन्दरनगर, जिला मण्डी, हि०प्र० 175019

पर्वतराज हिमालय की गगनचुम्बी शृंखलाओं का क्रम बहुत विशाल क्षेत्र में अपना आधिपत्य जमाये हुए युग-युगान्तर से मानव को अपनी ओर आकृष्ट करता आया है। कोई उनकी आश्चर्यजनक ऊंचाई से, कोई उनमें फैले विशाल वनों से, कोई हिम-मण्डित शिखरों से, कोई उनमें उत्पन्न होने वाली विभिन्न अथाह वन सम्पदाओं से, कोई उनमें विचरण करने वाले वनैले वनचरों से, कोई उनमें निवास करने वाली जन-जातीयों की प्राचीन संस्कृति से आकृष्ट होकर यहां पर भ्रमणार्थ आता है और आकर इस विचित्र संसार में रम जाता है। अत्यन्त प्राचीन काल से पर्वतीय वन हमारे ऋषि-मुनियों, साधकों, तपस्वियों का केन्द्र बने रहे हैं जो नागरिक जीवन की दौड़ धूप एवं अशान्ति को त्याग कर इनकी शान्त एवं रमणीक उपत्यकाओं की गोदी में बैठ कर इनके रचयिता की रचना पर मुग्ध होकर आध्यात्मिक आनन्द से आकण्ठ आप्लावित हो गये। सचमुच ये पर्वत, ये जंगल, ये नदियाँ, ये जल-प्रपात प्रत्येक प्राणी को स्फूर्ति, उत्साह एवं सुख प्रदान कर देते हैं।

धौलाधार के रम्य शैल शिखरों की कुक्षि में बसा आनन्द आश्रम यूँ तो बहुत लोगों की श्रद्धा का केन्द्र है परन्तु साधकों के लिये इसका महत्त्व कुछ विशेष है। एक ओर विशाल चोटियाँ हिम से लदी पड़ी रहती हैं तो दूसरी ओर रावी का स्वच्छ एवं स्वतन्त्र जल किसी अल्हड़ की भांति मार्ग में पड़ी प्रस्तर शिलाओं से अठखेलियाँ करता हुआ, अपने निनाद से दूर-२ तक के वातावरण में संगीत लहरियाँ उत्पन्न करता हुआ एक विचित्र स्वर छेड़ जाता है। चील, देवदार, पलाश, पीपल, बादाम, अखरोट, सेब, आड़ू, आम, जामुन आदि फलों के वृक्षों के घेरे में किसी दुर्ग की भांति स्थित यह आश्रम अत्यन्त शान्त और मनोहर जान पड़ता है। इस क्षेत्र में आने वाला प्रत्येक पर्यटक प्रायः यहाँ आकर आनन्द आश्रम के बारे में जानने के लिये उत्सुक रहता है। परन्तु यहाँ पर पर्यटकों के आने का समय अवकाश का होता है, बाहर के लोग केवल उसी समय आश्रम में प्रवेश कर सकते हैं। अधिकतर आश्रमवासी उस समय भ्रमण के लिये जाते हैं अथवा आश्रम के कार्य करते हैं।

आश्रम के अध्यक्ष स्वामी आनन्द मुनि जी बड़े अनुशासनप्रिय, मितभाषी, सरल एवं उच्च कोटि के साधक हैं। गोरा रंग, ऊँचा कद, गम्भीर स्वर, आकर्षक देहयष्टि, आँखों में दिव्य तेज, विशिष्ट आभायुक्त एवं सदा मुस्कुराता हुआ मुखमण्डल किसी को भी अपनी ओर बरबस आकर्षित कर लेता है। काषाय वस्त्रों में उनका रंग और भी निखर उठता है और देखने वाला श्रद्धावनत हो जाता है।

स्वामी आनन्द मुनि को यहाँ पर आये लगभग पन्द्रह वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। जब वे आये थे तो बड़ी विक्षिप्तावस्था में थे। यहाँ पर कैसे आ गये? यह तो स्वयं उन्हें भी नहीं पता चला कि यहाँ पर किस उद्देश्य से आये थे। जीवन में कुछ ऐसा घटित हुआ था जिसने उन्हें अत्यन्त नैराश्य में धकेल दिया था और वे विक्षिप्त होकर यत्र-तत्र भटकते फिर रहे थे। न जाने कैसे उन्हें कोई साधु मिल गया और वे उसके साथ यहाँ पर चले आये। उस समय स्वामी ध्रुवानन्द जी यहाँ पर रहते थे। उच्चकोटि के साधक होने के साथ-२ वे कुशल वैद्य भी थे। आनन्द को उस समय उनमें बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हुई और स्वामी जी का चुम्बकीय व्यक्तित्व उन्हें अपनी ओर खींच लाया। उनके कुशल संरक्षण में आनन्द का आत्मिक विकास भी हुआ और उनकी दशा भी सुधरी। तब से आनन्द इसी आश्रम के हो कर रह गये थे।

जीवन मे क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। दुष्ट वृत्तियों के दमन से हृदय निर्मल हुआ और आन्तरिक ज्योति का उदय हुआ। अब तक जो मन सांसारिक विषय वासनाओं में फंसा हुआ था, ईश्वर की ओर लग गया और आनन्द आश्रम का रूप भी दिनों दिन निखरने लगा। इस आश्रम का नाम पहले आनन्द आश्रम न था, केवल आश्रम के नाम से ही लोग जानते थे, स्वामी ध्रुवानन्द जी का आनन्द से अत्यन्त स्नेह हो गया था और उन्होंने इस आश्रम का नाम भी आनन्द रख दिया। भवन की देख रेख, गऊओं को संभालना, बगीचे में फलदार वृक्षों का रख-रखाव, पुस्तकालयों की व्यवस्था को ठीक करना, खेती की व्यवस्था ठीक करना, अतिथियों की सेवा सत्कार आदि- कौन सा कार्य ऐसा था जिसे आनन्द ने न संभाला हो। कोई भी कार्य होता तो सब यही कहते कि

आनन्द से पूछ लो, उसी को पता होगा। आनन्द का व्यवहार प्रत्येक आश्रमवासी के साथ इतना मधुर एवं श्रेष्ठ था कि सभी उसके नाम की माला जपते थे। स्वामी ध्रुवानन्द की तो वह धुरी बन गया। स्वामी जी ने इसे स्नेह क्या दिया कि इसने तो सेवा से स्वयं को उनका प्राण बना दिया। जब स्वामी जी का अन्त समय आया तो वे आश्रम को आनन्द को सौंप गये और आनन्द को स्वामी आनन्द मुनि बना दिया। आज स्वामी आनन्द मुनि इस आश्रम का ही नहीं, इस क्षेत्र के लोगों के मनों का भी स्वामी है। सेवा कार्य से आस-पास के सभी लोग उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। जब खेतों से अन्न निकालने का समय होता है तो सर्वप्रथम आश्रम में अन्न जाता है, उसके पश्चात् घरों में। यूँ तो आश्रम की अपनी भूमि भी है, जहाँ पर्याप्त मात्रा में अन्न एवं फल उत्पन्न होते हैं, परन्तु यहाँ भी कार्य अधिकतर गांव वासी ही सेवा भाव से करते हैं। स्वामी आनन्द मुनि जब प्रेम से उनके सिर पर हाथ रख देते हैं तो मानो उन्हें सब कुछ प्राप्त हो जाता है। आश्रम में अब साधनों को कोई अभाव नहीं है अपितु मान प्रतिष्ठा के साथ-२ प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति भी है। जब भी कोई अतिथि आ जाता है तो उसको उदर पूर्ति में कोई कठिनाई नहीं आती।

> वासना ईश्वर प्रदत्त नहीं है। यह हमारी अपनी है। यदि वासना ईश्वर प्रदत्त होती तो फिर मन में भय, शंका और लज्जा उपस्थित ही नहीं होते।

वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो गई है। घनघोर घटायें नभ मण्डल में स्वतन्त्र होकर यत्र-तत्र विचरण करती हैं। पर्वत शिखरों पर घूमते बादलों के समूह बड़ा विचित्र एवं मनमोहक दृश्य उपस्थित करते हैं। कहीं काले, कहीं कुछ श्वेत, कहीं हल्के, कहीं गहरे बादलों का समूह जब पर्वतों में घूमता है तो उस छटा का वर्णन करने में लेखनी असमर्थ है। बादलों के बीच से निकली पर्वत की चोटी मानो उनसे बचने के लिये और अधिक ऊपर उठना चाहती है। मानो कह रही हो कि मुझे श्वास लेने के लिये कुछ तो बाहर रहने दो। काली घटा के बीच से झांकती हरे रंग की चोटी की हरयाली और भी निखर उठती है। यही लुका छिपी का खेल दूर-२ तक दृष्टिगोचर होता है। कहीं-२ अकेली चोटी के इर्द गिर्द लिपटी घटाओं को देखकर लगता है जैसे किसी विशालकाय अजगर ने उन्हें लपेट रखा हो। ठण्डी हवायें जब तन को स्पर्श करके जाती हैं तो सारे शरीर में एक झुरझुरी सी उत्पन्न कर जाती हैं। पर्वत प्रदेश में वर्षा की ऋतु एक अदभुत मस्ती लेकर आती है।

पर्वत शृंखला के निचले भाग में फैले वनों के मध्य स्थित आनन्द आश्रम की छटा आज देखते ही बनती है। वर्षा की रिमझिम बूंदों का आनन्द आज आनन्द आश्रम निवासियों ने भी उठाया और नभ से बरसने वाले प्रसाद रूपी जल में भीगते हुए समस्त लोग उत्साह में भर गये। दोपहर के समय स्वामी आनन्द मुनि का व्याख्यान भी ईश्वरीय रचना पर आधारित था। 'देवस्य पश्य काव्यं न ममार, न जीर्यति' अर्थात् उस जगदीश्वर के काव्य (इस संसार) को देखो जो न कभी मारता है और न ही बूढ़ा होता है। उस प्रभु के दो काव्य हैं- एक उनका ज्ञान वेद और दूसरा यह प्रकृति। संसार रूपी काव्य ही व्याख्या करते-२ स्वामी आनन्द मुनि बड़े भावुक हो उठे। श्रोताओं ने भी उनकी वाणी में ऐसा उत्स कभी नहीं पाया था। व्याख्यान के उपरान्त स्वामी जी आखें बन्द करके ईश के ध्यान में मग्न हो गये।

आज प्रातः काल से ही वर्षा अपने पूरे रंग से हो रही है। काली घटाओं ने सूर्य को पूरी तरह से ढक लिया है। दिन में भी रात का दृश्य उपस्थित हो गया है। नभ मण्डल में चमकती बिजली रह-२ कर कड़कती है और घनघोर गर्जना से प्राणी मात्र के हृदय को भी दहला जाती है। मयूर आदि पक्षियों का भयाक्रान्त स्वर प्रत्येक गर्जन की गम्भीरता का परिचय दे जाता है। पेड़ों, लताओं, गुल्मों से टपकता वर्षा जल, मानो भीषण गर्मी के उपरान्त उन्हें सहला-२ कर सारा ताप हर रहा है। नदी नद सब उफान पर आ गये हैं। पानी पर्वत के विभिन्न स्थानों से अनवरत बहने लगता है जो अपने साथ विशाल शिलाओं को भी उखाड़ लाता है। आने जाने के मार्ग प्रायः अवरुद्ध रहते हैं, जिससे यात्रा में भारी कठिनाई आती है। आज भी वैसा ही हुआ। आनन्द आश्रम से आगे जाने वाला मार्ग बन्द हो गया। एक कार जिसमें तीन चार व्यक्ति बैठे थे, मार्ग में अटक गई। अब यह मार्ग कम से कम एक दिन तक खुलने वाला नहीं है, अतः अन्य कोई चारा न देखकर वे आश्रम में आ गये। यहाँ उनके भोजन एवं आवास की व्यवस्था हो गई।

सायंकाल को फिर साधना हुई। साधना कक्ष में जैसे ही स्वामीजी ने प्रवेश किया और मंच पर विराजमान हुए तो आज जो महिला मार्ग अवरुद्ध होने के कारण आश्रम में आकर रुकी थी और इस समय साधना कक्ष में विद्यमान थी, उसे एक तीव्र आघात सा लगा। मानो विद्युत् का एक झटका पूरे शरीर को कंपकंपा कर चला गया हो। उसे सहसा अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ कि जो कुछ वह देख रही है सत्य है या स्वप्न!

स्वामी जी ने मंच पर बैठ कर जैसे ही कुछ बोला तो उसका विश्वास और भी पुष्ट हो गया। आह! वही चिर-परीचित स्वर। बस केवल थोड़ा गम्भीर हो गया है। एक छोटे से

प्रवचन और मन्त्रपाठ के उपरान्त सभी लोग ईश्वर के आनन्द में मग्न होने का प्रयास करने लगे। एक अद्‌भुत शान्ति चहुं ओर छा गई। सायंकाल को अस्त होते सूर्य की कुछ रश्मियाँ स्वामी जी के मुखमण्डल को स्पर्श करके मानो उन्हें आशीर्वाद देने लगीं। भुवन भास्कर की लालिमा ने उनकी शोभा को द्विगुणित कर दिया।

> पाप का विश्लेषण करने के लिए तुम्हें भला और किस परिभाषा की आवश्यकता है? मन के स्वार्थ एवं पाप की वृत्ति को हटा कर एक बार सबको अपना समझ कर देखो। देखना तुम्हें कितना उत्साह एवं बल मिलता है।

नवागन्तुक महिला का ध्यान तो क्या लगना था, स्वामीजी के मुख से उसकी दृष्टि हटने का नाम न ले रही थी और मन--? मन का तो क्या कहना!

पिछला जीवन एक चलचित्र की भाँति उसकी आँखों के सामने चलने लगा। आनन्द और वह महाविद्यालय में साथ-२ पढ़ते थे। दोनों में प्यार हो गया था। आनन्द एक निर्धन परिवार से था और वह बहुत धनवान परिवार की पुत्री थी। धन वैभव की कोई कमीं न थी, जितनी आनन्द के परिवार की मासिक आय थी उससे अधिक तो वह एक समय बाजार में व्यय कर देती थी। फिर भी वह आनन्द के गुणों पर मुग्ध थी। आनन्द निराशा के सागर में डूब गया और एक दिन अनाचक वह घर से चला भी गया। कहाँ गया? किसी को पता न था। परन्तु आज यूं इस परिस्थिति में उससे भेंट होगी, आंचल ने सोचा भी न था।

साधना कब समाप्त हो गई और सब लोग उठ-२ कर स्वामी जी को प्रणाम करके निकल भी गये, परन्तु आंचल जड़वत् बैठी थी। उसके अकेली रह जाने पर जब स्वामी जी का ध्यान उस ओर गया तो वे भी भौंचक्के रह गये। वे धीरे से उसके पास गये और बोले-"आप! आप यहाँ कैसे? आंचल ने कहा- 'हम कुछ दिन पूर्व यहाँ आये थे। आज वापस घर लौट रहे थे कि वर्षा के कारण मार्ग रुक गया। अन्य कोई आश्रय न था, अतः यहाँ शरण ली। परन्तु हमें यह पता नहीं था कि आप यहाँ--!!"

"हां मैं बहुत दिनों से यहीं पर रह रहा हूँ और अब मेरा जीवन परिवर्तित हो चुका है", स्वामी जी ने कहा।

वे फिर बोले, "अब तुम अपने कक्ष में जाओ। यदि किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो मंगल को कह देना। वह यहाँ का सेवक है।" इतना कह कर स्वामी जी अपने कक्ष की ओर चले गये। बाहर पर्वतों पर सूर्य रश्मियाँ अपनी अद्‌भुत छटा के साथ-२ रंगों का खेल खेल रही थी। आस पास के विशाल पर्वतों के ऊपर अंधकार अपनी चादर डाल रहा था। पश्चिम की लाली धीरे-२ पर्वतों के पीछे जाकर अंधकार में पविवर्तित हो गई। आश्रम का पूरा वातावरण इस समय झींगुरों के गान से गुंजित हो रहा था। न जाने कैसे कैसे स्वर बिखर रहे थे।

ज्यों-२ रात बढ़ रही थी, झिंगुरों का स्वर भी बढ़ रहा था। आंचल के मन में विचित्र सी उथल पुथल मची हुई थी। आनन्द का रूप यहाँ आकर कैसा निखर गया है। उसमें कितना आकर्षण उत्पन्न हो गया है। सोचते-२ वह धीरे कदमों से अपने कक्ष में चली गई। भोजन के उपरान्त सब लोग अपने-२ स्थान पर सोने के लिये चले गये तो फिर वर्षा का वेग प्रारम्भ हो गया। आंचल का मन एक विचित्र व्याकुलता से धड़क रहा था। रह-२ कर आनन्द की मोहिनी छवि उसकी आँखों के आगे आ रही थी। वर्षों से दबी प्यास एक बार फिर मन को उद्वेलित करने लगी थी। कभी वह सोचती कि यह पाप होगा, कभी सोचती पाप पुण्य क्या है? क्या मैं इसे प्यार नहीं करती थी? क्या मेरा नहीं था? बहुत देर तक वह उधेड़ बुन में पड़ी रही। फिर न जाने किस शक्ति ने उसे वहाँ से उठ कर चलने को विवश कर दिया। वह चली और स्वामी के कक्ष का द्वार खटखटा दिया। उस समय जितनी वेग से वर्षा हो रही थी उतने ही वेग से उसका हृदय भी धड़क रहा था। द्वार पर आकर उसने पहले सोचा कि लौट जाये पर न जाने हाथ कैसे द्वार पर जा पड़े। थोड़ी देर के पश्चात् द्वार खुला और स्वामी जी बाहर आये। किंचित् आश्चर्य से बोले, "देवी तुम इस समय यहां? तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिये था।"

आंचल अन्दर चली आई। बोली, "क्या मैं तुमसे थोड़ी देर बात कर सकती हूँ?"

स्वामी जी बोले, "यदि तुम पिछले जीवन के बारे में कुछ कहने आई हो तो कोई आवश्यकता नहीं। मैं अपने पिछले जीवन को भूल चुका हूँ।"

"क्या पिछला जीवन भुलाना इतना सरल है? क्या भुला देने से वह समाप्त हो जाता है।" आंचल ने कहा।

"तो आप क्या चाहती है? इस समय क्या इस विषय पर बहस करने आई हो?" आनन्द के स्वर में रूखापन था।

'क्या हम थोड़ी देर के लिये सब कुछ भुलाकर अपने जीवन के इन क्षणों को प्यार से जी सकते हैं?' आँचल की आँखों में उसके मन की भावना स्पष्ट झलक रही थी। आनन्द अपने बिस्तर पर बैठ गए और बोले-'बैठ जाओ और मेरी बात ध्यान से सुनो। वासना के दूषित विचार को त्याग दो जो तुम्हें यहाँ खींच लाया है। मैं इस समय एक साधक हूँ और तुम एक परस्त्री, जिसके बारे में सोचना भी मेरे लिये

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

स्वास्थ्य के कुछ मूलभूल सिद्धान्त

❒डॉ० इन्दीवर मिश्र

संसार में भूख से पीड़ित होकर उतने व्यक्ति नहीं मरते, जितने अधिक भोजन करने के कुपरिणाम से मरते हैं।

अगर किसी को कुछ स्थाई उपलब्धि प्राप्त करनी है तो उसे उस दिशा में वर्षों तक व्यस्त रहना होगा क्योंकि एक या दो वर्षों में वैसा करना संभव नहीं होगा। इसलिए अगर तुम देश के लिए कुछ स्थाई कार्य करना चाहते हो तो तुम्हें इस ढंग से चलना होगा कि तुममें कई वर्ष तक काम करने की क्षमता बनी रहे। यह सच है कि कोई नहीं कह सकता कि अंतिम प्रस्थान का क्षण कब आएगा लेकिन फिर भी आत्महनन से या बूते से बाहर काम करके फायदा नहीं होगा।

बहुत सी बातें मनुष्य के वश के बाहर हैं लेकिन इसके बावजूद अपने स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा एक अपराध है-न केवल अपने प्रति, बल्कि, औरों के तथा अपने देश के प्रति भी। अगर हमारे देश के युवक आरंभिक अवस्था में ही अपना स्वास्थ्य गंवा दें तो कहना पड़ेगा कि उनके आदर्श में कहीं कुछ भूल या छोटापन है। तुम्हारा शरीर तुम्हारा अपना नहीं हैं, तुम तो केवल उसके न्यासी हो। आत्मा में भी यह क्षमता नहीं है कि शरीर को स्वास्थ्य के नियमों का उल्लंघन करने की शक्ति दे सके।

उक्त उद्‌गार क्रांति के अमर देवता 'नेता जी' सुभाष चंद्र बोस के हैं, जो उन्होंने स्वास्थ्य के प्रति प्रकट किये हैं।

हम इस युग में वैज्ञानिक यंत्रों की सुख-सुविधा प्राप्त करने के लिए नगरों में बस रहे हैं। हमारा जीवन प्रकृति से निरंतर दूर होता जा रहा है। घनी बस्तियों में न स्वच्छ वायु मिल पाती है और न सूर्य का प्रकाश ही। खुले मैदान में यदि हम घूमना भी चाहें तो शहर से कई मील दूर जाना पड़ेगा। हमारा जीवन अधिकाधिक व्यस्त होता जा रहा है। ऐसी दशा में यह दुष्कर सा लगता है कि हम दस-पांच किलोमीटर प्रातः घूमने के लिए जाएं।

खाद्य-सामग्री की दशा भी शोचनीय है। दूध-घी में लाभ के लिए इतनी अधिक मिलावट कर दी जाती है जिससे हमारे स्वास्थ्य को लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़ती है। चाय, सिगरेट, बीड़ी, काफी, पान मसाला आदि मादक वस्तुएं हमारी पाचन-शक्ति पर दूषित प्रभाव डाल रही हैं। फलतः हमारा स्वास्थ्य प्रतिदिन गिरता जाता है, जिससे भंयकर बीमारियां शरीर में बस कर उसे नष्ट कर रही हैं। स्वास्थ्य-निर्माण का सबसे अच्छा मार्ग यही है कि प्राकृतिक नियमों की अवहेलना कदापि न करें। रात्रि में देर तक जगना और सूर्योदय के बाद घंटों तक बिस्तर पर पड़ा रहना हानिकारक है। जो मनुष्य इस प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं उनकी शारीरिक शक्ति विलुप्त हो जाती है और बौद्धिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

प्रातःकाल चार बजे का समय ब्रह्ममुहूर्त कहा जाता है और उस समय जग जाना हमारे लिए बड़ा ही कल्याणकारी है। प्रातःकाल जगकर शौचादि क्रिया से निवृत्त होकर खुली हवा में टहलने से नवीन चेतना और शक्ति उत्पन्न होती है। ग्रीष्म ऋतु में गर्म वस्तुएं तथा शीतकाल में ठंडी वस्तुएं हानिकर होती हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कितनी ही वस्तुएं हैं जो हमारे स्वास्थ्य साधन में सहायक हो सकती हैं।

महात्मा गांधी ने कहा था कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर के सभी अंगों का कार्य नियमित रूप से होना जरूरी है। स्वस्थ वही है जो बिना थकान के दिन भर काफी शारीरिक और मानसिक मेहनत कर सके। शरीर से अपना और दूसरे का भला किया जा सकता है, पर इसका दुरुपयोग करें तो यह अपने लिए भी बुराई का कारण बनता है और दूसरों का भी काम बिगड़ता है। यदि शरीर को हवा, पानी, खुराक नियमित रूप से मिलती रहे और वह बिना आलस्य के ठीक तौर से काम करता रहे, तो अस्वस्थ होने का कोई कारण नहीं हो सकता।

बुराईयों से अपने मस्तिष्क को दूर रखकर नियम से प्रत्येक कार्य करने का अभ्यास डालना चाहिए। नैमित्तिक क्रियाएं यदि ठीक तथा निश्चित समय पर नहीं की जाएंगी तो हमारी पाचन क्रिया पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। अध्ययन को जितना महत्त्व दिया जाए उतना ही व्यायाम और खेलकूद को भी देना चाहिए और अधिक व्यायाम करने अथवा खेलने से शरीर में इतनी थकावट आ जाएगी कि हमारा सारा समय विश्राम में ही समाप्त होगा। इसलिए खेल-कूद की एक सीमा निश्चित कर देनी चाहिए जिससे हमारे अध्ययन में रुकावट न आए।

भोजन के प्रति गांधी ने कहा था–पशु पक्षी न स्वाद के लिए भोजन करते हैं, न इतना खाना खा लेते हैं कि पेट फटने लगे। वे अपने भोजन को पकाते नहीं–प्रकृति जैसा देती है, वैसा ही कर लेते हैं। संसार में भूख से पीड़ित होकर उतने व्यक्ति नहीं मरते, जितने अधिक भोजन करने के कुपरिणाम से मरते हैं। हम लोग अधिक भोजन करने के थोड़े–बहुत अपराधी हैं, इसलिए धार्मिक दृष्टि से कभी–कभी व्रत रखने के नियम बनाए हैं। सचमुच स्वास्थ्य की दृष्टि से पक्ष में एक दिन व्रत–उपवास करना जरूरी है। आहार संतुलित और विवेकपूर्ण हो तो कोई रोग हो नहीं सकता।

भोजन से ही रक्त बनता है और हम शक्तिशाली बनते हैं। अतः भोजन उत्तम होना चाहिए। यहाँ उत्तम से यह तात्पर्य नहीं है कि हम पूड़ी, कचौड़ी, मिठाई व पकवान खाएँ–यहाँ उत्तम भोजन का तात्पर्य यह है कि हमारा भोजन ऐसा हो जिसमें सभी विटामिन प्राप्त हो सकें। भोजन स्वल्प और सादा होना चाहिए। भोजन को खूब दांतों से पीसकर निगलना चाहिए। कुछ ऐसी वस्तुएं हैं जो सभ्यता का अंग बन गई हैं। इनके व्यवहार में अधिकाधिक सावधान रहना चाहिए। चाय, काफी, पान मसाले आदि में कुछ ऐसे विष होते हैं जो धीरे–धीरे हमारे आमाशय को अव्यवस्थित कर देते हैं। फलतः भोजन ठीक से नही पचता है। सिगरेट पीने से भी पाचन–प्रणाली में दोष आ जाता है और हमारे उदर में वायु–विकार होने लगता है।

साथ ही साथ जो कुछ जैसा भी भोजन मिले, प्रसन्न होकर खाना चाहिए। विश्राम की ओर भी पर्याप्त ध्यान देना चाहिए पर **भोजन के उपरांत सोना हानिकारक होता है।** स्वच्छ वायु का सेवन व व्यायाम हमें शक्ति देते हैं अतः इनके प्रति कदापि उदासीन न होना चाहिए।

स्वास्थ्य की रक्षा करके ही हम अपनी तथा राष्ट्र की उन्नति करने में समर्थ हो सकते हैं। रोगी मनुष्य कोई भी विचारात्मक अथवा परिश्रम का कार्य नहीं कर सकता। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें अपने स्वास्थ्य निर्माण की ओर पर्याप्त ध्यान देना नितांत आवश्यक हैं।

महर्षि अरविंद घोष के शब्दों में:– स्वस्थ होने के लिए पहली चीज यह करनी चाहिए कि स्नायुओं के आक्रमण के वश में मत होओ। तुम इन विचारों और संवेदनाओं के जितना अधिक वश में होते हो उनके साथ तादात्म्य करते हो, वे उतने ही अधिक बढ़ते हैं। तुम्हें अपने को पीछे हटा लेना है और अपने अंदर किसी ऐसी वस्तु को फिर से खोज निकालना है जो पीड़ाओं और अवसादों से प्रभावित नहीं होती। उसके बाद वहाँ स्थित होकर तुम पीड़ाओं और अवसादों से मुक्ति पा सकते हो।

नकसीर(Epistaxis) कुछ घरेलु इलाज

❒नरेश सिहाग 'बोहल'

नकसीर गर्मी के मौसम में प्रायः कई लोगों को लग जाती है। नकसीर में नाक से गर्मी के कारण खून गिरने लग जाता है। अगर गर्मी में किसी को नकसीर लग जाये तो निम्नलिखित उपाय करने चाहिए :–

❖ पाव भर दूध में शक्कर (चीनी) मिलाकर दो केलों के साथ निरन्तर बारह दिन प्रयोग करें, नकसीर से छुटकारा मिल जायेगा।

❖ मक्खन में थोड़ा–सा कपूर (मुश्क कपूर, जो यज्ञाग्नि में डाला जाता है) मिलाकर माथे पर लेप करने से नकसीर रूक जाती है।

❖सिर पर ठंडे पानी की धार डालने से नाक से रक्त गिरना बंद हो जाता है।

❖ नाक के नथूनों में २–२ बूंद नीबू का रस टपकाने से नाक में से निकलने वाला खून तुरंत बंद हो जाता है।

❖ सुहागे को थोड़े–से पानी में घोलकर नथूनों पर लेप करने से नकसीर में आराम मिलता है।

❖ आम की गुठली का चूर्ण सूंघने से भी नकसीर बंद हो जाती है।

❖ अनार का रस नथुनों में डालने से नाक से खून आना बंद हो जाता हैं।

❖ आंवले का मुरब्बा नकसीर में बहुत ही लाभदायक है। प्रातः नाश्ते में आंवले का मुरब्बा प्रतिदिन लें।

❖ तुलसी का रस नथुनों में डालने से भी नकसीर बंद हो जाती है।

❖ थोड़ी मुलतानी मिट्टी को रात में पानी भिगो दे। प्रातः पानी को नितार कर पीयें। पुरानी नकसीर कुछ दिन में ठीक हो जायेगी।

नोटः– नकसीर के मरीज को बर्फ, चाय, कॉफी आदि गर्म पदार्थों के सेवन से परहेज रखना चाहिए। इनके स्थान पर दही व छाछ का प्रयोग करें। नाक की चोट से बचें, तेज धूप में न घूमें। नकसीर के रोगी चिकित्सक से परामर्श लेकर आपना स्थाई इलाज करवायें।

जानते हो?

❒हर्षित योगी

❍ वह क्या है जिस का पानी से जन्म होता है और वह पानी के स्पर्श से ही मर जाता है?
❍ एक जलती है, दूसरी जलाती है परन्तु दोनों मिलकर बुझा देती हैं?
❍ ऐसी कौन सी चीज है जिसका नाम लेने से वह टूट जाती है?
❍ वह क्या है, जिसका मुंह छोटा होता है, पर बहुत बात करता है?
❍ चार पैर होते हुए भी, चल नहीं पाता, दो हाथ होते हुए भी काम नहीं कर पाता।
❍ वह क्या है, जो हमारा है पर उसका प्रयोग प्रायः दूसरे ही करते हैं।

उत्तरः- नमक, हाइड्रोजन जलती है, आक्सीजन जलाती है किन्तु दोनों को मिलाने से पानी बन जाता है, खामोशी, टेलीफोन, कुर्सी, नाम।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

❒अनुव्रत

☺ पुत्रः पिताजी पाण्डव कौन थे?
पिताः अरे मूर्ख, तुझे इतना भी नहीं मालूम। फिर तू स्कूल में पढ़ता ही क्या है? ला रामायण, मैं अभी तुझे बताता हूँ, कि पाण्डव कौन थे।

☺ बीबी जीः अरे दूधवाले तुम हर रोज दूध लेट लाते हो, शर्माजी का तो दूधवाला ठीक टाईम पर दूध दे जाता है।
दूधवालाः बीबी जी, हमारे नल पर पानी ठीक टाइम पर नहीं आता, इसलिये आपका दूध भी लेट हो जाता है।

☺ एक बार एक मोटी औरत भूकम्प आने के कारण बिस्तर से गिर पड़ी। उसका पति भागा-भागा आया और बोला, तुम भूकंप आने से गिरी हो या भूकंप तुम्हारे गिरने से आया है?

☺ पिता अन्नु सेः बेटा आज स्कूल में शैतानी तो नहीं की?
अन्नुः नहीं पिताजी, आज तो मैं शांति से बैंच पर खड़ा रहा।

☺ दुकानदार(नौकर से)ः ग्राहक जो भी कहे उसे सही मान लेना चाहिये, उससे बहस नहीं करनी चाहिये। वैसे तुम्हारे साथ वह झगड़ा क्यों कर रहा था?
नौकरः वह कह रहा था तुम्हारा मालिक चोर है।

☺ पिता पुत्र को गिनती सिखा रहा था- इकाई के बाद दहाई, सैंकड़ा, हजार, लाख, करोड़ और अरब आता है, अरब के बाद क्या आता है?
पुत्रः जी अरब के बाद ईरान आता है।

प्रहेलिकाः

❖कागज का घोड़ा, धागे की लगाम
छोड़ दो धागा, करेगा सलाम!

❖धूप से वह पैदा होवे, छांव देख मुरझाए,
ऐ री सखी मैं तुझसे पूछूं, हवा लगे मर जाए।

❖चार खम्भों को चलते देखा,
आगे अजगर लटके देखा
ऊपर बैठे लालूराम
सबको करते चले, राम राम।।

❖सिर पर पत्थर, पेट में अंगुली।

❖एक गुफा के दो दरवाजे
उन पर तैनात दो रखवाले
दोनों हैं लम्बे, दोनों काले
जल्दी बूझो, बूझने वाले।

❖सब चले गये, बुढ़ऊ लटक गये।

❖कहने को खड़ा हूँ।
पैरों पर पड़ा हूँ।

❖हमने देखा जहाँ-जहाँ।
वह दौड़ी वहाँ-वहाँ।।

पतंग, पसीना, हाथी, अंगूठी, मूंछ, ताला, खड़ाऊं, नजर,

विचार कणिकाः

❒प्रतिभा

卐 पता है- लोगों के संकल्प पूरे क्यों नहीं हो पाते! क्योंकि वे साचते कुछ, बोलते कुछ और कर कुछ और जाते हैं।
卐 अच्छे विचारों से ही बुरे विचार समाप्त होते हैं; अच्छे व्यवहार से ही बुरे व्यवहार को समाप्त किया जा सकता है।
卐 समय व्यर्थ बीत गया तो पछतावा तुम्हारे भविष्य को अशांत कर देगा।
卐 जिन्हें अपने जीवन में कुछ करना ही होता है उन्हें रास्ते मिल ही जाया करते हैं-- और जिन्हें कुछ करना ही नहीं होता, उन्हें बहाने मिल ही जाया करते हैं।
卐 एक ही पत्थर से दो बार ठोकर खाना-- गलतियों को ठीक करने की जगह, उन पर अड़े रहना-- दूसरों की गलतियों को देखकर अपनी गलतियाँ न सुधारना-- एक बड़ी गलती है।

प्रेरक कथा

प्रस्तुति : प्रतीक मानव

आदमी का मूल्य

सन् 1398 ई॰ में तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया था। वह बड़ा क्रूर और आततायी लुटेरा था। इससे चारों ओर आतंक छा गया। उसने एक लाख लोगों को कैदी बनाया। दिल्ली के सुल्तान के साथ मुठभेड़ में सैनिक कम पड़े तो कैदियों की निगरानी करने वाले सैनिकों को बुलाने के लिए कैदियों के कत्ल कर दिए गए। इतिहासकारों ने लिखा है कि तैमूर के डर से भाग रहे लोग रुक कर केवल उसकी सेना पर गिर गए होते तो उसकी सेना पिस गई होती।

भारत की ही तरह बगदाद को लूटते समय उसने इतने ही लोगों को कत्ल करवा कर खोपड़ियों का पहाड़ बनवाया था। लोग उसके नाम से कांपते थे। लेकिन उसे एक बार एक कवि ने पराजित कर दिया।

तैमूर लंग के अनुयायी एक बार तुर्किस्तान के प्रसिद्ध कवि अहमदी को पकड़ लाए। उस समय तैमूर अपने कुछ गुलामों को मौत की सजा सुना रहा था।

अहमदी को देख कर तैमूर बोला– 'कहते हैं कवि बड़े पारखी होते हैं, इन गुलामों का मूल्य तो आंकिए भला।'

निडर अहमदी ने जवाब दिया– 'इनमें से कोई भी गुलाम चार सौ अशर्फियों से कम कीमत का नहीं हैं।'

'क्या खूब कीमत आंकी है तुमने, इन तुच्छ गुलामों की। अहमदी! अब तैमूर का मूल्य भी तो आंकिए।' तैमूर सुखद आश्चर्य से बोला।

अहमदी ने कहा– 'हुजूर! यह न पूछें तो अच्छा रहेगा।'

तैमूर ने गरजते हुए कहा– 'मैं जो पूछ रहा हूँ, तुम्हें बताना ही पड़ेगा। वरना तुम्हें भी सजाए–मौत होगी।''

अहमदी ने पूछा– 'यदि आप की सही–सही कीमत बता दूं तो?'

'तो तुम्हें कोई सजा नहीं दी जाएगी।' तैमूर खुश होता हुआ बोला। वह सोचता था कि अहमदी उसका मूल्य लाखों में आँकेगा।

'हुजूरे आली! मेरी नजर में आप की कीमत चालीस अशर्फियों से ज्यादा नहीं है।' कवि एक सांस में कह गया।

तैमूर तिलमिला उठा। खीझ कर बोला– 'इतने मूल्य की तो मेरी पोशाक है।'

अहमदी बोला– 'हां, हुजूर! मैंने आप की पोशाक का मूल्य ही आंका है। वरना जिसके दिल में मानवता, दया, प्रेम और न्याय नहीं है, भला उस व्यक्ति के शरीर का मूल्य क्या होगा? उसे तो कोई दो कौड़ी में भी नहीं खरीदेगा।'

कवि की निर्भीकता के समक्ष क्रूरता स्तब्ध रह गई। तैमूर लंग अहमदी की शक्ल देखता ही रह गया।

बच्चों की कविता

स्वच्छता

❑ सहदेव समर्पित

सबसे न्यारा सबसे प्यारा पथ है यह अच्छाई का।
सारे मिलकर सच्चे मन से करलें ध्यान सफाई का।।

दूषित पर्यावरण हमेशा कारण है नुकसान का।
सुन्दर वातावरण बनाना, बड़ा फर्ज इन्सान का।।

हो उत्साह हृदय में हरदम जजबा रहे भलाई का।।
सारे मिलकर सच्चे मन से करलें ध्यान सफाई का।।

जहाँ स्वच्छता है घर घर में,
फिर क्या काम बुराई का।।
सारे मिलकर सच्चे मन से
करलें ध्यान सफाई का।।

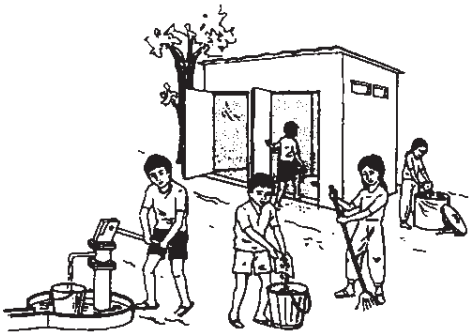

खुली गंदगी लापरवाही
नए नए रोग बढ़ाती हैं।
उन पर मक्खी बैठ बैठ कर,
रोगों को फैलाती हैं।।

अगर स्वच्छता है घर में तो,
मन भी चहका रहता है।
वातावरण शुद्ध हो तो फिर,
जीवन महका रहता है।

कूड़ा करकट को फैलाना,
काम नहीं अच्छाई का।।
सारे मिलकर सच्चे मन से
करलें ध्यान सफाई का।।

$2H_2O=2H_2+O_2$
जल = हाइड्रोजन+आक्सीजन

❑कृपाल सिंह वर्मा
253, शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ
99278 87788,

यदि पानी में विद्युत् प्रवाहित की जाये तो पानी हाइड्रोजन (H_2) तथा आक्सीजन (O_2) में विभक्त हो जाता है। इस तथ्य से भारतवासी हजारों वर्ष पूर्व परिचित थे। 'अगस्त्य संहिता' नाम की वैदिक विज्ञान की एक पुस्तक कुछ समय तक विद्यमान थी। संस्कृत भारती नामक दिल्ली के एक प्रकाशन ने The Physics नामक पुस्तक प्रकाशित की है। यह पुस्तक Dr. N.G. Dongre नामक वैज्ञानिक ने लिखी है। वैज्ञानिक Dr. N.G. Dongre संस्कृत के विद्वान थे।

इस पुस्तक के पेज नं. 33 पर 'अगस्त्य संहिता' के चार श्लोक लिखें हैं-

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम्।
छादयेच्छिखिग्रीवेन चार्दाभि: काष्ठपांसुभि: ॥1
दस्तालोष्टो निधातव्य: पारदाच्छादितस्तत:।
संयोगाज्जायते तेजो मित्रावरुणसंज्ञितम् ॥2
अनेन जल भंगोऽस्ति प्राणोदानेषु वायुषु।
एवं शतानां कुम्भानां संयोग: कार्यकृत् स्मृत:।।3।।
वायुबन्ध वस्त्रेण निबद्धो यान मस्तके।
उदान स्वलघुत्वे विभर्त्याकाश यानकम्।।4।।

पहले दो श्लोकों का अर्थ-

मिट्टी के एक पात्र में ताम्बे की पत्तियां लगायी जायें। फिर कोयले के पाउडर से तथा लकड़ी के गीले बुरादे से इस पात्र को भर दिया जाये। फिर इसमें जिंक पाउडर मोण्ड भरा जाये और इसे पारे से बन्द कर दिया जाये। इससे पात्र में आन्तरिक क्रिया होती है तथा मित्र और वरुण नामक तेज उत्पन्न होते हैं।

तीसरे व चौथे श्लोक का अर्थ-

ये मित्र व वरुण नामक तेज जल का विभाजन प्राणावायु तथा उदानवायु में कर देते हैं। इसके लिए इस प्रकार के सौ पात्रों का प्रयोग करना चाहिए। वायु बन्धक वस्त्र में उदान वायु को भरना चाहिए। उदानवायु भरे वस्त्र को किसी यान के मस्तक से बान्ध देने से, यह यान को आकाश में ले जाता है।

पहले दो श्लोकों में Voltaic Cell का वर्णन है जिसका आविष्कार 1800 ई. में हुआ था।

इस वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि-

(i) हजारों वर्ष पूर्व भारतवासी बैटरी बनाकर विद्युत् धारा उत्पन्न करना जानते थे।

(ii) विद्युत् धारा का उपयोग कर जल को हाइड्रोजन तथा आक्सीजन में तोड़ना जानते थे।

(iii) हाइड्रोजन का उपयोग कर यान को आकाश में उड़ाना जानते थे।

इस प्रकार भारतीय शिल्पशास्त्र तथा Modern Technology में अत्यन्त समानता है।

इस विवरण से भारतीय शिल्पशास्त्र के कुछ तकनीकी शब्दों का ज्ञान होता है जैसे-

तेज = Electric Charge
मित्र = Positive Charge(+)
वरुण = Negative Charge(-)
प्राणवायु = Oxygen Gas
उदानवायु = Hydrogen Gas
शिखिग्रीव = Coal Powder
पारद = Mercury
यानकम् = Flying Machine
जलभंग = Decomposition of water
शिल्पशास्त्रम् = Technology
आर्द्र काष्ठपांसु = Moisten wood saw Dust
दस्तालोष्ठ = Zink Powder mond

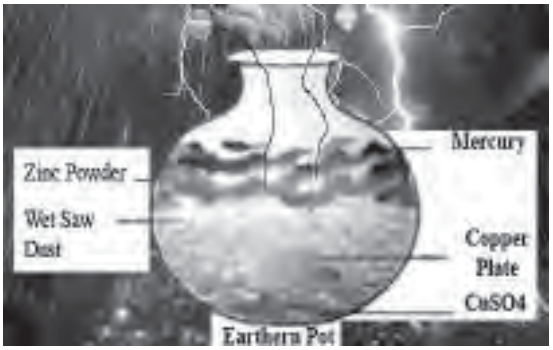

भजनावली

रचयिता : स्व० पं० चन्द्रभानु आयौपदेशक

१

आकर के बाजार में बाजार बन गया।
संसार यूँ गले का तेरे हार बन गया।।
सर दिया था गुरुओं की सेवा में झुकाना।
तू अपना समझ बैठा और सरदार बन गया।।
आंखें दई थी धरती पर तू देख कर चलना,
जिसको भी देखा उसका खरीदार बन गया।।
क्या है रसना जिसमें मधुरता का रस नहीं,
गाली गलौच कर करके गंवार बन गया।।
चन्द्रभानु योगाभ्यास छोड़कर मरे--
दो फिल्मी तर्जे गाई और प्रचार बन गया।।

२

ओ३म् का तू जाप करले बैठकर एकान्त में।
योगाभ्यास से ही तेरा जीवन होगा शांत में।।
यम नियम का पालन करके शान्ती मिल जावेगी।
हृदय में फुलवाड़ी तेरी आप ही खिल जावेगी।।
नींव पाप की हिल जावैगी लिखा है वेदान्त में।।१।।
धारणा उसी को कहें मन मजबूर हो।
सात्त्विक इन्द्रिय बनें विषयों से दूर हो।।
सुखों से भरपूर हों ना डोलें प्रान्त प्रान्त में।।२।।
चित्त की ये वृत्ति तेरी इधर उधर दौड़े नहीं।
मन भी रहेगा साफ मर्यादा को तोड़े नहीं।।
आदत नहीं छोड़ती ये होकर के भ्रान्त में।।३।।
आसन सिद्ध करके अपना खींच प्राणायाम तू।
चन्द्रभानु नित्यप्रति जपना प्रातःशाम तू।।
करना ऐसे काम जो हों वेद के सिद्धान्त में।।४।।

३

है श्रेष्ठ कर्म संसार में, करो यज्ञ सभी नरनारी।
यज्ञ से शुद्ध भवन होता है, यज्ञ से शुद्ध पवन होता है,
यज्ञ से शुद्ध तन-मन होता है,
यज्ञ होता जिस परिवार में-वहाँ कभी न होवे हारी।।१।।
सामग्री में गुग्गल रलालो, उचित मात्रा में घृत मिलालो।
फिर उसकी तुम आहुति डालो,
यज्ञ की धुंवाधार में-कट जाएँ सब बीमारी।।२।।
जो व्यक्ति नित यज्ञ करता है-औरों के दुःख को हरता है।
पाप करण से भी डरता है-
लग जाता है उपकार में-उसे मिलती है सरदारी।।३।।
प्राणिमात्र का भला यही है, और जीने की कला यही है।
चन्द्रभान की सलाह यही है,
जुट्या रहे वेद प्रचार में-तेरी मिटी ऐषणा सारी।।४।।

४

आर्य बाला बोली जल्दी ऊठ रंग वाले।
केसरिया रंग में रंग दे मेरा सूट रंग वाले।।
बन्दे बैरागी ने ये केसरिया बाणा धारा था।
गुरु गोविन्द के साथ मिले बादशाह फटकारा था।
इस बाणे पर गोविन्द ने चारों पुत्रों को वारा था।
उनके साथ देश-घाती गंगु ने जुल्म गुजारा था।।
आर्यों ने सदा रही डोबती फूट रंग वाले।।१।।
शिवाजी महाराज ने इकदिन पहनी केसरिया वर्दी।
तानासिंह ने पहन इसी को लाखों की खाई भर दी।
महाराणा ने इसकी खातिर ना देखी गर्मी सर्दी।
सारी सुखसुविधा त्यागी स्वाभिमानी ने हद करदी।
हल्दी घाटी में पकड़ी थी मूठ रंग वाले ।।२।।
इस बाणे मैं नेताजी ने आजाद भारतवर्ष किया।
इस बाणे में चंद्रशेखर ने गोरों से संघर्ष किया।
इस बाणे में भगतसिंह ने लटक दार पर हर्ष किया।
इसी बाणे में दयानन्द ने दुनिया का उत्कर्ष किया।
उन से पहले मचा रहे थे लूट रंग वाले।।३।।
इस बाणे में रणजीतसिंह ने काबुल पै करी चढ़ाई थी
इस बाणे मैं जवाहर सिंह ने दिल्ली तेग बजाई थी।
इसी बाणे मैं तुलाराम ने गोरों पे धाक जमाई थी।
मर कर अमर हो गई इक झांसी की लक्ष्मीबाई थी।
चन्द्रभान सच्ची कहते नहीं झूठ रंग वाले।।४।

मिर्चपुर में इण्डस स्कूल का शुभारम्भ

इण्डस पब्लिक स्कूल की शृंखला में मिर्चपुर जिला हिसार में एक और नवीन शाखा का शुभारम्भ नये सत्र से वैदिक रीति के अनुसार हवन यज्ञ से किया गया। कार्यक्रम में डॉ० एकता सिंधु, डॉ० राजवीर ढांडा, डायरैक्टर सुभाष श्योराण, विवेक वर्मा, अजय सिंधु, सतपाल श्योराण, एडवोकेट रघुवीर मलिक, सुरेश कोथ सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। आयोजकों ने क्षेत्र में शिक्षा स्तर के उत्थान का संकल्प व्यक्त किया।

(कार्यालय प्रतिनिधि)

आर्यसमाज जींद जंक्शन के तत्त्वावधान में तीनदिवसीय वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। श्री ओमप्रकाश शास्त्री सम्पादक दयानन्द संदेश के मधुर प्रवचन व पं० रामकुमार आर्य के ओजस्वी भजन हुए। अन्तिम सभा में आर्यसमाज लाजपतराय चौक हिसार के संरक्षक चौ० हरिसिंह सैनी, प्रधान चौ० बदलूराम आर्य, दानवीर सेठ बजरंग लाल ने मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर आशीर्वाद दिया। श्रद्धालुओं ने पधारे हुए विद्वानों के प्रवचन सुनकर धर्मलाभ उठाया। प्रधान मा० सूरजमल जुलानी ने अतिथियों का स्वागत किया। मंत्री मा० पृथ्वीसिंह मोर ने कार्यक्रम का संयोजन किया। (कार्यालय प्रतिनिधि)

महर्षि दयानन्द योग व प्राकृतिक चिकित्सा आश्रम जींद में पांच दिवसीय योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। स्वामी रामवेश जी ने सिरदर्द, गैस, मधुमेह, सवाइकल, नजला आदि रोगों के निवारण के लिए सरल विधियों का प्रशिक्षण दिया। समापन समारोह वैदिक सत्संग के रूप में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि मा० जगदीश संधु को सम्मानित किया गया। स्वामी रामवेश मा० देवराज आर्य, सहदेव समर्पित, चौ० रणधीरसिंह रेढू, विद्यासागर शास्त्री ने भी संबोधन किया। समापन पर ऋषि लंगर भी लगाया गया।

शोक समाचार

प्रतापसिंह शास्त्री का आकस्मिक निधन

आर्य जगत् के प्रसिद्ध लेखक, विद्वान् पत्रकार श्री प्रतापसिंह शास्त्री का निधन १४ मई २०१५ वीरवार को हृदयगति रुकने से हो गया। इससे आर्यसमाज को बड़ा आघात पहुंचा है। उनकी आयु ६८ वर्ष थी। उनका जन्म ग्राम मतलोडा जिला हिसार में आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक चौ० श्रीचन्द्र आर्य के घर ७ अप्रैल १९४७ को हुआ था। इनकी शिक्षा गुरुकुल भैंसवाल तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार में हुई। उन्होंने आर्यसमाज का इतिहास, जाट इतिहास आदि बहुत सी पुस्तके लिखीं। वे प्रभावशाली वक्ता और सिद्धहस्त प्रत्रकार भी थे। उनके सहस्रों लेख विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। उन्होंने जीवन भर अपने पिता के पद चिह्नों पर चलते हुए आर्यसमाज का प्रचार प्रसार किया। वे बहुत शानदार व सुसंस्कृत व्यक्तित्त्व के धनी थे।उन्होंने समाज में अपनी अमिट छाप छोड़ी। श्री प्रतापसिंह शास्त्री ने संस्कृत अध्यापक के रूप में कार्य करते हुए महत्त्वपूर्ण सामाजिक व साहित्यिक अवदान किया। उन्होंने पत्रकार और लेखक के रूप में 'अलखपुरा से कलकत्ता' 'आर्यसमाज के दस नियमों की अपूर्व व्याख्या' पं० लखपतराय की जीवनी आदि स्थायी महत्त्व के ग्रंथ लिखे। वे कई वर्ष तक आर्यसमाज हिसार के मंत्री रहे। वे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालयव अन्य सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े रहे। व्यक्तिगत रूप से वे बहुत ही सरल और मिलनसार व्यक्तित्त्व के धनी थे। उनके अनुज भ्राता प्रा० महीपाल पूनिया भी एक प्रतिष्ठित साहित्यकार और शिक्षाविद् हैं। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति दे और परिवारजनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति दे।

सत्यपाल सिंह आर्य
प्रधान आर्यसमाज डोहानाखेड़ा, जींद

राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए शोधपत्र आमंत्रित

अथर्व शोध संस्थान भिवानी, गुगनराम सोसायटी व महर्षि दयानन्द शिक्षा संस्थान संयुक्त रूप से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहे हैं जिसके मुख्य विषय 'महर्षि दयानन्द सरस्वती व हिन्दी' व 'आर्यसमाज का नारी उत्थान में योगदान' हैं। इस संगोष्ठी के लिए माननीय प्रतिभागियों से उक्त विषयों पर शोधपत्र आमन्त्रित हैं। शोधपत्र 2000-2500 शब्दों में शुद्ध टंकित करवाकर ईमेल grsbohal@gmail.com पर ओपन फाईल में भेजें ताकि शोध पत्रों को पुस्तक रूप देने में सुविधा हो। साथ ही शोध-पत्र की एक हार्ड कापी के साथ अपना परिचय, फोटो एवं स्वयं का पता लिखा लिफाफा व पंजीकरण शुल्क रु 500/- का चैक/ड्राफ्ट/ आईपीओ **रामफलसिंह दलाल** के नाम बनवाकर भेज सकते हैं। शोध पत्र 31 अगस्त 2015 तक पंजीकृत डाक या कोरियर द्वारा इस पते पर भेजें-

अन्तर्विषय:

(१) आर्यसमाज का हिन्दी आन्दोलन
(२) महर्षि दयानन्द का हिन्दी गद्य/पद्य पर प्रभाव
(३) आर्य साहित्यकारों का हिन्दी को योगदान
(४) आर्य समाज का नारी शिक्षा में योगदान

डॉ० रामफलसिंह दलाल
निदेशक, अथर्व शोध संस्थान,
आर्यन टावर, रोहतक गेट भिवानी-127021 (हरियाणा)
चलभाष : 093155 17276

वेद में सरस्वती– पृष्ठ १० का शेष

इनकी उपयोगिता स्वीकार की गई है। इन नामों से परमेश्वर का भी ग्रहण होता है। उसका ध्यान दु:खों का नाशक और मुक्ति को देने वाला होता है। इस मंत्र के प्रकरण में पूर्व से भी ईश्वर की अनुवृत्ति है।

इसी प्रकार 'सितासिते यत्र संगमे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।' इस परिशिष्ट वचन से भी कुछ लोग गङ्गा और यमुना का ग्रहण करते हैं और 'सङ्गमे' इस पद से गङ्गा–यमुना का सङ्गम प्रयाग तीर्थ यह ग्रहण करते हैं। वेद के अनुसार यह ठीक नहीं है। यहाँ पर दयानन्द एक मौलिक तर्क देते हैं कि गङ्गा और यमुना के संङ्गम अर्थात् प्रयाग में स्नान करके देवलोक को नहीं जाते किन्तु अपने अपने घरों को आते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वह तीर्थ कोई और ही है जहाँ स्नान करने से देवलोक अर्थात् मोक्ष प्राप्त किया जाता है।

स्वामी दयानन्द के अनुसार यहाँ भी सित शब्द से इडा का और असित शब्द से पिङ्गला का ग्रहण है। इन दोनों नाड़ियों का सुषुम्णा में जिस स्थान में मेल होता है, वह सङ्गम है। वहाँ स्नान करके परमयोगी लोग 'दिवम्' अर्थात् प्रकाशमय परमेश्वर, मोक्ष नाम सत्य विज्ञान को प्राप्त करते हैं। यहाँ भी इन दोनों नाड़ियों का ही ग्रहण है। यहाँ ऋषि ने निरुक्त का प्रमाण भी दिया है। विस्तार के लिए ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका देखिये।

इस संक्षिप्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि–

१– वेद में सरस्वती नाम अनेक स्थानों पर आया है।

२– वेद में सरस्वती का उल्लेख नदी के रूप में भी आया है।

३– वेद में सरस्वती का उल्लेख धरती के किसी स्थान विशेष पर बहने वाली नदी के रूप में नहीं आया है। न ही वेद में सरस्वती से संबंधित किन्हीं व्यक्तियों का इतिहास है।

४– सरस्वती नदी की ऐतिहासिकता को वेद से प्रमाणित करने का प्रयास वेद का अवमूल्यन करना है।

सरस्वती का इतिहास

अब प्रश्न उठता है कि क्या सरस्वती नदी के पुरातन काल में अस्तित्त्व को प्राचीन संस्कृत साहित्य द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सकता? इसका उत्तर है कि किया जा सकता है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि इस धरती पर सरस्वती नाम की नदी बहती थी। सर्वप्रथम मनुस्मृति का प्रसिद्ध प्रमाण है–

सरस्वतीदृष्द्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते।।

सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच जो देश है उसको ब्रह्मावर्त्त कहते हैं।

बाल्मीकि रामायण में भरत के ननिहाल से अयोध्या आने के प्रकरण में अन्य नदियों के साथ सरस्वती का उल्लेख है–

सरस्वतीं च गङ्गां च उग्मेन प्रतिपद्य च। तथा
सरस्वती पुण्यवहा हृदिनी वनमालिनी।
समुद्रगा महावेगा यमुना यत्र पाण्डव:।। (महाभारत ३/८८/२)

कहा जाता है कि महाभारत में सरस्वती नदी का २३५ बार उल्लेख है और इसमें इसकी स्थिति को भी प्रदर्शित किया गया है। ३/८३ के अनुसार कुरुक्षेत्र सरस्वती के दक्षिण में है और दृषद्वती के उत्तर में है। प्राचीन पुराणों, नवीन पुराणों, भारत, रामायण आदि ग्रंथों में सरस्वती के अनुसंधान करने चाहिएँ, वेद में नहीं। भारतीय इतिहास ग्रंथों में यह स्पष्ट रूप से नदी है।

ओ३म्

योग अपनाओ **रोग भगाओ!**

योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर लगवाने के लिए सम्पर्क करें

योगाचार्य सूर्यदेव आर्य

सम्पर्क : योग सदन, नजदीक महादेव पैट्रोल पम्प, उधमसिंह मार्ग,
कृष्णा कालोनी, जींद–१२६१०२ मो० ९४१६६ १५५३६, ९४१६७ १५५३७

और बादल छंट गए – पृष्ठ २३ का शेष

पाप है। सब कार्य समय और परिस्थिति के अनुकूल ही अच्छे लगते हैं। अब न तो पहले वाला समय है, न परिस्थिति। अत: तुम अपने इस पापमय विचार को त्याग दो और शांत होकर अपने कक्ष में चली जाओ।'

आँचल बोली–' प्यार करना पाप कैसे हो सकता है? तुम जिसे वासना कहते हो, वह भी तो भगवान की ही देन है। क्या कोई मनुष्य सर्वथा वासना शून्य हो सकता है? जिस कार्य में हमें सुख मिलता हो, वह अनुचित कैसे हो सकता है? मान लो वासना ही सही, तो फिर वासना में भी ऐसा क्या है जो अनुचित है?'

आनन्द ने कहा–'देवी! वासना का सबसे भयंकर रूप तो यही है कि यह अति स्वार्थी होती है। दूसरे वह पतन का, बंधन का कारण बनती है। रहा सुख अथवा दु:ख-- वह तो आपके अनुभव करने की बात है। जहाँ स्वार्थ आ गया, वहाँ पाप में भला क्या संशय रहा? मैं साधक हूँ, साधना ही मेरा मार्ग है और मुक्ति मेरा लक्ष्य। तुम में और मुझ में यही भेद है कि तुम केवल स्वयं को देखती हो, मैं सब को देखता हूँ। क्या तुम जो कार्य इस समय यहाँ करने आई हो उसे सबके सामने कर सकती हो? अथवा सब को करके बता सकती हो? पाप का विश्लेषण करने के लिए तुम्हें भला और किस परिभाषा की आवश्यकता है? मन के स्वार्थ एवं पाप की वृत्ति को हटा कर एक बार सबको अपना समझ कर देखो। देखना तुम्हें कितना उत्साह एवं बल मिलता है। मैं किसी से घृणा नहीं करता। सबसे प्रेम करता हूँ। परन्तु उस प्रेम में कहीं स्वार्थ की गन्ध तक नहीं है। सभी मेरे अपने हैं। मैं किसी को पराया नहीं समझता। तुम भी मेरे लिये पूज्या हो, आदरणीया हो। मुझे तो तुम्हारे अन्दर भी उसी ईश्वर का रूप दिखाई देता है। मैं भला अपने प्रभु के साथ वासनामय, स्वार्थमय सम्बन्ध कैसे रख सकता हूँ! मुझे इसका भय नहीं कि तुम्हें यहाँ कोई इस समय मेरे पास देख लेगा तो मेरा अपयश होगा, जबकि तुम्हें इस बात का भय अवश्य है कि यदि तुम्हें इस समय तुम्हारा कोई परिचित देख ले तो तुम्हारी क्या दशा होगी? वासना ईश्वर प्रदत्त नहीं है। यह हमारी अपनी है। यदि वासना ईश्वर प्रदत्त होती तो फिर मन में भय, शंका और लज्जा उपस्थित ही नहीं होते। अत: लौट जाओ देवी! अपने कक्ष में जाकर विश्राम करो, मैं प्रात: काल तीन बजे उठ जाता हूँ। इस समय बारह बज रहे हैं। मुझे भी विश्राम करना है।"

यह सुनकर आँचल सन्न सी रह गई। सारे तर्क, सारा आग्रह, सारी मलिनता मानो रेत की दीवार की भाँति ढह गई। उसे वहाँ से उठना भी मुश्किल हो गया। भारी कदमों से उठकर स्वयं को धकेलती हुई सी बाहर आई और अपने बिस्तर पर धड़ाम से गिर गई। सिर घूम रहा था। ओह! मैं यह क्या करने चली थी। मेरे मन में यह दूषित विचार आया कैसे? अच्छा हुआ इन्होंने मुझे गिरने से बचा लिया।

प्रात: काल की साधना के समय स्वामीजी का अति सुन्दर उपदेश हुआ। उपस्थित लोग वाह वाह कर उठे। विषय था– जन्म-जमान्तर के संस्कार और वासना को दग्धबीज करना। मन्त्र था 'तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु' अर्थात् हमारा मन सदैव शुभ संकल्पों ये युक्त रहे। कभी भी अशिव अर्थात् अशुभ संकल्पों को इसमें स्थान न मिले। आज स्वामी जी के व्याख्यान ने आँचल के मन में जमी हुई मलिन पर्तों को मानो जड़ से उखाड़ फैंका।

प्रात: काल उठ कर वह सोच रही थी कि मैं इनसे भला किस प्रकार से आँखें मिला पाऊँगी। मेरे बारे में ये क्या सोच रहे होंगे। परन्तु स्वामी जी का उपदेश इतना सुन्दर, इतना मनोहर था कि आंचल के मन का पाप आँसुओं की लड़ी बन कर बह गया। अब उसके मन में कोई पछतावा न था, कोई भय न था। स्वामी जी के प्रति उसके मन में अब श्रद्धा की भावना जग उठी थी। हृदय की गुहा से वासना की घटायें विदा ले चुकी थीं और मन उत्साह एवं प्रेम से भरा था। एक नया बल जग उठा था और एक नया प्रभात हृदय में उदय हो रहा था।

साधना की समाप्ति पर आंचल भी अन्य लोगों के साथ आई और स्वामीजी के चरण स्पर्श करके चलने लगी। स्वामी जी ने आशीर्वाद दिया और कहा, "बहन जी! कभी बच्चों को भी लेकर आओ। हमारे यहाँ बच्चों के शिविर भी लगते हैं। उन्हें संस्कारवान् एवं चरित्रवान् बनाया जाता है। स्वामी जी की आंखों में न घृणा थी, न उपेक्षा और न ही तिरस्कार। थी तो केवल श्रद्धा, प्रेम और निश्छलता!

आंचल ने बाहर आकर देखा तो आकाश में बादल समाप्त थे, सूर्य की चटख धूप निकली हुई थी। शीतल वायु चल रही थी। इतने में चालक ने आकर स्वामी जी के चरण पकड़ लिये और वह फूट-२ कर रोने लगा। स्वामी जी ने कई बार पूछा तो वह बोला, "स्वामीजी मुझे क्षमा कर दो। मैंने आप पर सन्देह करके, अपने गुरु पर सन्देह करके महापाप किया है।"

सन्देह! कैसा सन्देह? स्वामी जी ने पूछा। वह बोला– 'कल रात जब यह महिला आपके कक्ष की ओर जा रही थी तो मैं भी चुपके-२ उसके पीछे आ गया। खिड़की के साथ लग कर आपकी सारी बातें सुनी। परन्तु आप बिल्कुल निष्पाप, निष्कलंक निकले।"

स्वामी जी उसकी पीठ थपथपा कर ध्यान में बैठ गये और आंखे बन्द करके ईश्वर का धन्यवाद करने लगे।

सावधानी

गर्मी के हादसों से निपटने के उपाय

❑विनोद बंसल
329, द्वितीय तल, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली 110065.

तापमान मई के महीने में ही 47 डिग्री सेल्शियस को पार कर गया तो आगामी दो माह में किन परिस्थितियों से गुजरना होगा, इसका अनुमान हम आसानी से लगा सकते हैं। इन दिनों जहाँ भगवान सूर्य गर्मी के अंगारों की वर्षा करते हैं वहीं मानव निर्मित साधन भी उसी के द्वारा जोड़े गए जन-धन को मिनटों में ही चट कर जाते हैं। लोग अपने जीवन की कमाई का एक बड़ा हिस्सा लगा कर अपने सपनों को पूरा करने हेतु जो भवन, गाड़ी या घर किसी तरह जुटाते हैं वे जरा सी असावधानी से चंद मिनटों में तबाह हो जाते हैं। सम्पत्ति के साथ-साथ जब अनगिनत लोगों की जान भी चली जाती है तब पश्चाताप होता है कि काश! हमने सावधानी बरती होती तो ये दिन हमें नहीं देखने पड़ते।

गर्मी ने दस्तक दी नहीं, कि जगह-जगह आग लगने का सिलसिला शुरू हुआ नहीं। 22 मई को राजधानी दिल्ली में एक ही दिन में तीन जगह आग लगी। लगभग चार दर्जन अग्नि शामक गाड़ियों ने घण्टों जूझकर आग पर तो किसी तरह काबू पा लिया किन्तु जान-माल की हानि जो हुई क्या उसकी भरपाई कोई कर पाएगा? नहीं! किंतु, यदि हम तैयार हैं तो निश्चित रूप से इन हादसों को रोकने या उनका प्रभाव न्यूनतम करने में अपनी अहम भूमिका निभा सकते हैं। यदि हम कुछ भूलों, असावधानियों या लापरवाहियों पर काबू पा लें तो न केवल अपने खर्चों में कटौती कर सकते हैं बल्कि अनेक बड़ी दुर्घटनाओं और शारीरिक कष्टों से छुटकारा पा सकते हैं। इससे हम स्वयं को व अपने पड़ोसी को भी सुरक्षित जीवन दे सकते हैं-

1. बिजली के मेन स्विच, पैन्ट्री हीटर तथा अन्य ऐसे उपकरणों जिनसे आग लगने का खतरा हो, से कागज, प्लास्टिक, कपडा इत्यादि ज्वलनशील वस्तुओं को दूर रखें।
2. बिजली के लोड को निर्धारित सीमा में रखें जिससे बिजली की फ़िटिंग, मीटर या सप्लाई लाइन पर अनुचित दबाव से होने वाले खतरों से बचा जा सके।
3. अपने प्रतिष्ठान या घर के बिजली की फ़िटिंग या वाइरिंग की समय-समय पर जांच करते रहें जिससे शार्ट सर्किट के कारण कोई हादसा न होने पाए।
4. अग्नि शमन यंत्रों तथा प्राथमिक उपचार यंत्रों की क्षमता/अंतिम तिथि (एक्सपाइरी डेट) की नियमित जांच करते रहें जिससे आपातकाल में वे काम आ सकें। इसके अलावा वहाँ रहने या काम करने वाले व्यक्तियों को उन यंत्रों को चलाने का उचित प्रशिक्षण भी अवश्य दें जिससे किसी भी हादसे के समय उनका उपयोग किया जा सके। बड़ों के साथ-साथ आवश्यकतानुसार आग बुझाने के छोटे सिलेंडरों का भी प्रयोग करें।
5. भवन में कहीं भी जलती हुई बीड़ी, सिगरेट के टुकडे या माचिस की तीली इत्यादि को न फैंकें। धूम्रपान पर पूर्ण प्रतिबन्ध हादसों को रोकने में सदा सहायक रहता है। एलपीजी/सीएनजी गैस या उसके सिलेंडरों का प्रयोग ऑफ़िसों में या तो बिल्कुल ना करें अन्यथा बहुत सावधानी पूर्वक नियत मानदण्डों के अनुरूप ही करें।
6. आग लगने की स्थिति में लिफ़्ट की सेवाएँ न लें तथा गीला रूमाल या कपडे का प्रयोग करें जिससे सांस लेने में तकलीफ़ न हों।
7. सायंकाल अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान को बढ़ाने (बन्द करने) से पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि वहाँ लगे कम्प्यूटर, यूपीएस, टीवी, एयर कंडीशनर, हीटर, फ़ोटो कॉपीयर इत्यादि सब ठीक तरह से बन्द कर दिए गए हैं।
8. ऑफ़िस/फ़ैक्ट्री छोड़ने से पूर्व यह भी सुनिश्चित कर लें कि बिजली के सभी मेन स्विच ठीक से बन्द हैं जिससे बिजली की अनावश्यक खपत पर भी अंकुश लगेगा और हमारी अनुपस्थिति में हो सकने वाली दुर्घटनाओं से भी मुक्ति मिलेगी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

।।ओ३म्।।

स्वामी भीष्म जी महाराज के शिष्य उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

स्व. पं. चन्द्रभान आर्य

की चुनी हुई रचनाओं का संकलन

(हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित)

भजन भास्कर

❖भक्ति ❖प्रेरणा ❖शौर्य ❖नारी, चार सर्गों में विभक्त

पृष्ठ : 98, मूल्य : ₹80 (अस्सी रुपये) केवल

पंजीकृत डाक से मंगवाने के लिए मूल्य अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान

शांतिधर्मी प्रकाशन

756/3 आदर्श नगर सुभाष चौक जींद-126102 (हरयाणा)

दूरभाष : 80596 64340, 94162 53826

संस्कारप्रद बाल साहित्य की दिशा में एक कदम

बाल गीतों का अनुपम संग्रह

हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित

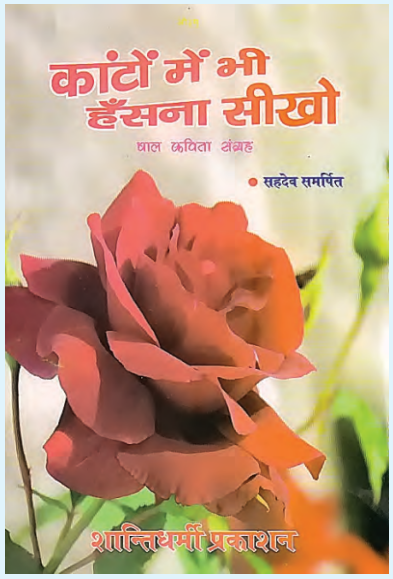

काँटों में भी हँसना सीखो

सहदेव समर्पित

बच्चों में पुरस्कार स्वरूप वितरित करने योग्य एक अनूठी पुस्तक

मूल्य : 100 रुपये। रजिस्टरी शुल्क हम वहन करेंगे।

अधिक पुस्तकें मंगाने पर विशेष छूट

सम्पर्क करें- शांतिधर्मी प्रकाशन

756/3, आदर्श नगर सुभाष चौक जींद-126102

ईमेल shantidharmijind@gmail.com

दूरभाष : 80596 64340, 94162 53826

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (मई, २०१५) P.R. No. : PKL 150-A/2014-16

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्र है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरूचिपूर्ण सामग्री होती है।

☆ **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।

☆ **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।

☆ **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का सन्देशवाहक है।

☆ **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।

☆ **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।

☆ **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

मूल्य : एक प्रति : 10.00 वार्षिक : 100.00 आजीवन : 1000.00

शान्तिधर्मी कार्यालय
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)
जीन्द-126102 (हरियाणा)
फोन 9416253826, 9253308840